श्री बाहुबली भगवान,श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 15	अंक : 6	मुम्बई, सितम्बर 2025	पृष्ठ : 32	मूल्य : ₹ 25	हिन्दी
VOLUME : 15	ISSUE : 6	MUMBAI, SEPTEMBER 2025	PAGES : 32	PRICE : ₹ 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2551

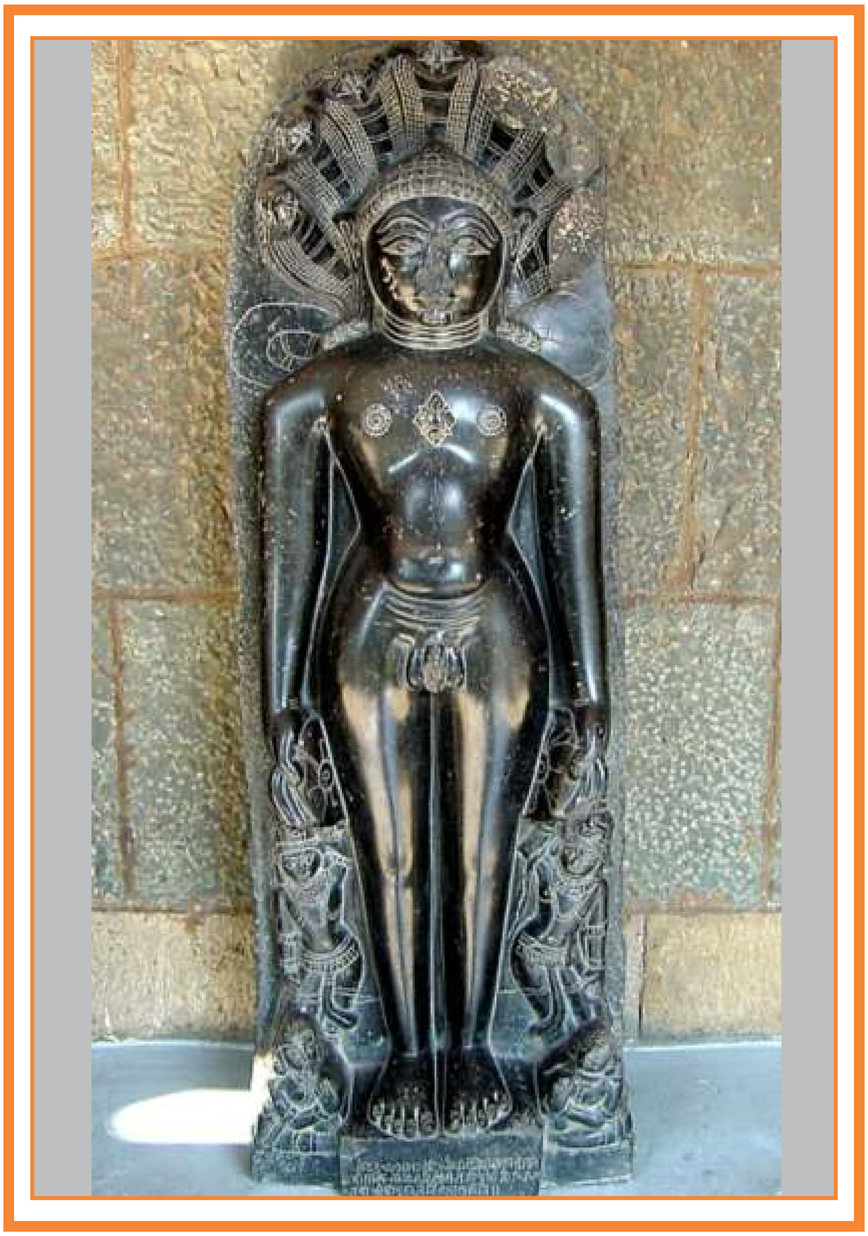

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान, प्रिन्स ऑफ वेल्स म्युजियम, मुम्बई

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 15 अंक 6 सितम्बर 2025

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2551

इस अंक में

प्रत्येक आत्मा को मुक्ति का सामर्थ्य है - मुनि प्रणम्य सागर जी	7
क्षमा से जागृत होता है प्रेम भाव	8
क्षमा: कमजोरी नहीं, बड़प्पन की निशानी है!	9
भारतीय संस्कृति में सुगंध दशमी एक सकारात्मक व्रत है	10
चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के ऐतिहासिक संस्मरण	11
जैन संस्कृत साहित्य में हनुमान	15
श्री दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर कटरा मेंदनीगंज, जिला प्रतापगढ़, उत्तरप्रदेश	21
तीर्थ गिरनार सुरक्षित तो धर्म, आस्था और संस्कृति सुरक्षित	22

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

उछाह हो या धारा, बात सब एक ही है

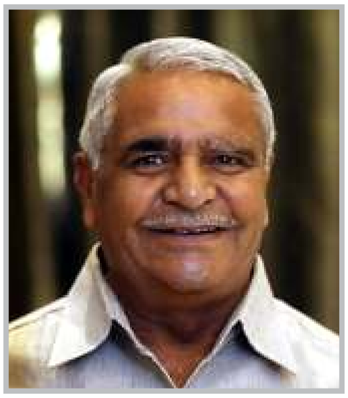

शाश्वत पर्व पर्युषण अर्थात् दसलक्षण सानन्द सम्पन्न हो चुके हैं। गत 28.08.25 से 06.09.25 तक हम सबने मिलकर आत्मकल्याण के पर्व पर्युषण में धर्म के मर्म को समझने का प्रयास किया। उपवास, एकासन, उनोदर या भोजन में संयम को अंगीकार कर महान जैन परम्पराओं के प्रति अपनी दृढ आस्था एवं विश्वास को व्यक्त किया। 08.09.25 यानी अश्विन कृष्ण प्रतिपदा को परम्परानुसार सभी जैन मन्दिरों सहित अनेक अन्य स्थानों पर क्षमावाणी पर्व मनाया गया। यह पर्व हम सबकी तपस्या की पूर्णता पर मनाया जाने वाला श्रेष्ठ पर्व है इसका जितना आध्यात्मिक महत्त्व हैं उससे कहीं ज्यादा समाजिक क्योंकि इसके माध्यम से हृदय में बसी गॉठे खुलती हैं। चिर संचित वैर के विसर्जन का अवसर मिलता है। शरीर की हारमोन स्रावी ग्रन्थियों से सकारात्मक स्राव प्रारम्भ होता है इससें चित्त प्रसन्न एवं शरीर स्वस्थ होता है। फलतः यह पर्व हमारे मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी बहुत उपयोगी है। सामाजिक संगठन के लिए तो यह वरदान है।

हमारे देश में पर्युषण पर्व की पूर्णता पर उत्साह एवं प्रसन्नता की प्रतीक रथ यात्रायें निकाली जाती हैं। यह उत्साह का प्रतीक है। अतः इन्हें उछाह कहते हैं। पश्चिमी उ.प्र. में तो यह ग्राम-ग्राम में प्रचलित है जहॉ रथ नहीं वहॉ पालकी यात्रा निकलती है उसे भी उछाह ही कहते हैं क्योंकि यह साधर्मी जैन बन्धुओं के उत्साह का प्रतीक है। सभी रथ यात्राओं के उपरान्त भगवान जिनेन्द्र देव का अभिषेक होता है। अभिषेक में भगवान के मस्तक पर जलधारा होती है। अतः उसे धारा कहते है। यह धारा भी जैन समाज के उत्साह या संगठन का प्रतीक होती है। आबाल वृद्ध सभी उत्साह पूर्वक इसमें सम्मिलित होते हैं। फिरोजाबाद एवं आगरा जनपदों के ग्रामों में जहॉ एक से अधिक मन्दिर हैं वहॉ अलग-अलग तिथियों पर धाराऐं की जाती हैं। सभी में अधिकतर जैन परिवार सम्मिलित होते हैं इसमें प्रेम एवं संगठन मजबूत होता है यह श्रेष्ठ एवं अनुकरणीय परम्परायें हैं। फिरोजाबाद में पूज्य प्रज्ञाश्रमण मुनि श्री अमितसागर जी ने अनेक मन्दिरों में स्वयं उपस्थित होकर अपना पावन सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

सम्पूर्ण देश में एक और श्रेष्ठ परम्परा है। पर्व के दिनों में बने प्रशस्त भावों को पुष्ट करने एवं पुण्य अर्जित करने के भाव से अनेक परिवार तीर्थों की यात्राएं करते हैं। मैं स्वयं आप सबसे अनुरोध करूंगा कि इस सितम्बर माह में सुविधानुसार निकट या दूर की तीर्थं यात्रा अवश्य करें। तीर्थो के विकास में सहभागी बनें। राशि का महत्त्व तो है ही किन्तु उससे ज्यादा महत्त्व आपके आगमन का है। हमारी गुल्लक योजना का लेंवे।

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का शाश्वत तीर्थ अयोध्या में नैमित्तिक अधिवेशन 6 अक्टूबर को है, यह उ. प्र. में हो रहा है अतः उ. प्र. के बन्धुओं की सहभागिता ज्यादा रहेगी किन्तु सम्पूर्ण देश के तीर्थ प्रेमी जैन बन्धु सादर आमंत्रित हैं। हम सब मिल बैठकर तीर्थों की वर्तमान स्थिति एवं भावी योजनाओं पर चर्चा करेंगे, योजनाये बनायेंगे। शीघ्र ही हम तीर्थ सर्वेक्षण की व्यापक एवं विस्तृत योजना पर एक कार्यशाला आयोजित करेंगे एवं कार्य प्रारम्भ करेंगे।

माधुरी की वापसी

इन पक्तियों के लिखे जाने के समय ही पूज्य आचार्य श्री गुणधरनन्दि जी महाराज से एक शुभ सूचना मिली है, नांदणी जैन मठ की लोकप्रिय हथिनी माधुरी जो मठ परिवार का अंग थी एवं दक्षिण भारत की जैन समाज में अत्यन्त लोकप्रिय थी उसे माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर वनतारा से वापस मठ लाया जा रहा है। यह हमारे संगठन एवं अहिंसा की जीत है, माधुरी का स्वागत है। भट्टारक जिनसेन स्वामी जी ने कोल्हापुर की जैन एवं जैनेत्तर समाज को साथ लेकर जो सशक्त आन्दोलन चलाया तथा क्षेत्रीय राज नेताओं ने निर्विकल्प समर्थन दिया वह अनुकरणीय है। यह जन भावनाओं की जीत है। वनतारा प्रबन्धन का भी धन्यवाद।

सबसे अन्त में मैं स्वयं अपनी एवं अपनी तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से आप सबसे विगत वर्ष में हुए समस्त ज्ञात-अज्ञात अपराधों एवं भूलों के लिए क्षमा प्रार्थी हूं।

उत्तम क्षमा

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

आत्मिक विकारों को दूर करने का महापर्व – क्षमावाणी पर्व

बंधुओं भगिनियों,

सादर जय जिनेन्द्र !

खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूदेसु, बेरं मज्झं ण केण वि ।।

क्षमावाणी महापर्व की इस पावन बेला में मैं आप सभी एवं संसार के समस्त जीवों से मेरा द्वारा जाने-अनजाने में अब तक हुए अपराधों, भूलों की क्षमा याचना करता हूँ, मेरी वाणी, व्यवहार, कार्य, अनुमोदन आदि में यदि आप को आहत हुआ हो, दुःख पहुँचा हो, तो कर जोड़कर हृदय से आपसे क्षमा याचना करता हूँ तथा समस्त जीवों के प्रति क्षमा का भाव रखता हूँ।

वास्तव में यह क्षमावाणी पर्व हम सबके लिए अत्यंत आवश्यक है, या कहें कि जीवन जीने के लिए पानी की तरह है। क्योंकि जब किसी से कोई बात अटक जाती है या मनमुटाव मन में पनप जाता है तो एक-दुसरे के सामने आने से इतराने लगते हैं, वह निमित्त तो चला जाता है परन्तु मन में खेद हमेशा के लिए छोड़ जाता है, जिस प्रकार प्रवाहित सरिता में कचरा फस जाने से पानी घूम कर जाने लगता है उसी प्रकार रिश्तों में भी मुह फेरे जाने लगते हैं तब यह क्षमा धर्म उस प्रवाहित सरिता के कचरा को हटाने के समान कार्य करता है और रिश्तों की गाँठ को सुलझाते हुए मन की कठोरता को कोमल करते हुए आपस में प्रेम और वात्सल्य को बढाता है।

क्षमावाणी का पावन पर्व आज सारे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि किस प्रकार भाईचारे के साथ प्रेम पूर्वक रहा जाये, अपने अन्दर के कालुष क्रोध, मान कषाय के वशीभूत मनुष्य क्षमा मागने से हिचकिचाता है या लज्ज़ा प्रतीत करता है परन्तु वास्तव में क्षमा वीरों का गुण है इसीलिए नीति में कहा गया है 'क्षमावीरस्य भूषणं'...! अर्थात क्षमा ही वीरों का आभूषण है।

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं आत्मा का एकमात्र स्वभाव ज्ञातादृष्टा रहना है किसी भी प्रकार की कषाय आत्मा का गुण नहीं है किंतु निमित्तों के चलते हम कभी क्रोधित, कभी लोभी, कभी मानी, तो कभी मायाचारी हो जाते हैं जो कि निजस्वभाव से सर्वथा भिन्न ही है और यही कषाय हमारी दुर्गति का कारण बन जाती है और सदियों से जीव इन्हीं भूलों को करता आ रहा है और अपने निजस्वभाव से च्युत होकर पर स्वभावी कषायों के जाल में फसा हुआ है। इसीलिए आचार्य जिनसेन आदिपुराण में लिखते हैं कि "क्षमा परलोक-विजय का सर्वोत्तम साधन है"।

यह दशलक्षण पर्व हम सभी के जीवन में आत्म शुद्धि के लिए आते हैं और अंत दिनों में हम क्षमावाणी पर्व के रूप में अपने अन्दर का कालुष धोने का कार्य करते हैं, यह क्षमावाणी पर्व सिर्फ एक औपचारिकता नहीं अपितु जीवन को सफल और सार्थक बनाने का अवसर है, क्योंकि यह मनुष्य पर्याय और देव-शास्त्र-गुरु की शरण बहुत ही दुर्लभ है और इस दुर्लभता को हम गंभीरता से अपने जीवन में उतारें और सभी से प्रेम, वात्सल्य, दया करुणा एवं क्षमा का भाव रखते और स्व और पर के कल्याण में तल्लीनता के साथ अपने जीवन का निर्वाह करें।

अंत में पुनश्च आप सभी से उत्तम क्षमा, मिच्छामी दुक्कड़म !

सबसे क्षमा, सबको क्षमा, उत्तम क्षमा,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

भोजन बनाये, धर्म बचाये

आपको यह विषय अटपटा जरूर लग रहा होगा किन्तु यह २०२५ की हकीकत है। पहले संयुक्त परिवार होते थे घर की जो बड़ी बुजुर्ग महिला काकी/दादी/चाची होती थी उसके अनुशासन में परिवार की बहुऐं/बेटियॉ अथवा अन्य महिलायें बारी—बारी से भोजन बनाती थी। पूरे परिवार का भोजन एक साथ बनता था। सभी भाई—बहन, चाचा—भतीजे, देवर—भाभी मिलकर साथ भोजन करते थे। एक दूसरे की पाककला की परिवार में बड़ी तारीफ होती थी। १—२ बहू के मायके जाने या अस्वस्थ होने पर भोजन व्यवस्था यथावत—चलती रहती थी। दुर्भाग्यवश घर में कोई संकट आ जाये तो भी भोजन बनाने/परोसने का क्रम भंग नही होता था बल्कि तब और भी अधिक जिम्मेदारी से काम होता था इसीलिए बिन मॉ के बच्चे भी दादी, चाची, ताई द्वारा पल जाते थे। सबको अपने परिवार/खानदान का गौरव होता था। किन्तु लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने जैसे ग्रामों के स्वावलम्बी स्वरूप एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त किया वैसे ही बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं उनके द्वारा नियंत्रित टी.वी. चैनलों/सोशल मीडियॉ प्लेटफॉर्मो ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया। एकल परिवारों से उनके माल की बिक्री तो बढ़ गई किन्तु परिवारों की मुसीबतें भी बढ़ गई। महिलाओं के नौकरी करने के चलन ने कोढ़ में खाज का काम किया। तथाकथित नारी सशक्तीकरण ने मुसीबतों को बढ़ा दिया। महिलाओं का शिक्षित होना कदापि बुरा नही हैं। जरूरत पड़ने या मुसीबत के समय नौकरी भी जरूर करे किन्तु सब कुछ अच्छा है तब अपने बच्चों का बचपन, उनका सुख/चैन लेकर नौकरी करना उचित नहीं। परिवार के पुरूषों को भी ग्रह कार्य के महत्त्व को समझना चाहिए। उसका सम्मान करना चाहिए तथा उसका श्रेय भी महिलाओं को देना चाहिए। आजकल घरों में एक फैशन हो गया है खाना बनाने वाली बाई का। पहले बरतन वाली, झाड़ू—पोछा वाली, कपड़े धोने वाली बाई तो आती थी किन्तु खाना बनाने वाली बाई नहीं होती थी। यह काम घर की बहुऐं ही करती थी। उनके द्वारा बनाये खाने में उनका प्रेम, स्नेह, शुद्धता एवं पवित्रता के भाव रहते थे। अपने सास—श्वसुर, देवर, जेठ, भाई, पुत्र या परिजनों को भोजन कराने में संतुष्टि का भाव होता था। भोजन कराने एवं करने वाले दोनों प्रसन्न रहते थे। अब नौकर बनाते हैं जिनको केवल पगार की चिन्ता रहती है।

सप्ताहान्त में बाहर खाने के चलन ने स्थिति और जटिल कर दी है। अब तो चर्चा विभिन्न रेस्टोरेंट की रेसिपी पर होती है न कि काकी, भाभी, बहन या पत्नी के द्वारा बनाये जाने वाले व्यंजनों की क्वालिटी की।

लोग अब होटलों के खाने से उबने भी लगे हैं फिर से घर का खाना मॉगा जाने लगा है। किन्तु जैन परिवारों का तो पूरा ढ़ाचा ही बिगड़ चुका है। एकल परिवार की मालकिन ने अपने पति या बच्चों हेतु जब टिफिन सेवा की व्यवस्था कर दी है तब वह साधु संतों के आहार हेतु चौका कैसे लगायेगी ? अब घर—घर चौके की परम्परा १०—५ सालो में दुर्लभ हो जायेगी। अनेक नगरों में मन्दिरों से लगे संतनिवासों में सामूहिक चौकों की व्यवस्था की गई है। वहॉं चन्दे के द्रव्य से वेतनभोगी जैन दम्पतियों द्वारा चौके लगाये जाते हैं। इस व्यवस्था से एक—दो दम्पतियों को नौकरी तो मिल जाती है। किन्तु कहॉं की श्रद्धा? कैसी भक्ति ? एवं शुद्धि? वस्त्रों की शुद्धि तो रहती है किन्तु भावों की शुद्धि? राजस्थान एवं बुन्देलखण्ड जैसे क्षेत्र अपवाद हैं।

मैं इस स्थिति में अपनी बहनों से यह अनुरोध करूॅंगा कि आप उच्च शिक्षा लेवें, अपनी योग्यता बढ़ाये उसका उपयोग समाज के निर्बल वर्ग के बच्चो को मार्गदर्शन देने में करें। परिवार के साथ मिलकर स्वयं का व्यवसाय शुरू करें अथवा परिवार के व्यवसाय में सहभागी भी बने किन्तु मजबूरी की स्थिति में ही नौकरी करें। अपने बच्चों को स्वयं पढ़ाये, उनके साथ चर्चा करें, उनको संस्कार देवें। घूमे—फिरे, तीर्थ यात्रा पर जाये। अपने पति एवं बच्चों तथा यदि माता—पिता (सास—ससुर) साथ में है तो उनके लिए भोजन स्वयं बनाये यह बड़े पुण्य का कार्य है। माता—पिता का आशीर्वाद एवं बच्चों का स्नेह सबसे बड़ी सम्पत्ति है। पतिदेव को जो सुख—संतुष्टि आपके बनाये भोजन में मिलेगी वह न होटल दे सकता है और न कुशल बाई।

यदि आप भोजन बनायेंगी तो घर बचेगा एवं धर्म बचेगा। धर्म साधु/संतों से चलता है कपड़े वाले श्रावकों से नही।

वर्तमान दशलक्षण पर्व २०२५ की समाप्ति पर आप सब बहनें, महिला मंडल इस समस्या पर विचार करें। निदान ढूढें। ऑख मूंदने से खतरा टलता नहीं। हमारा धर्म, हमारी साधु संस्था खतरे में है।

क्षमा याचना सहित/उत्तम क्षमा।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

प्रत्येक आत्मा को मुक्ति का सामर्थ्य है - मुनि प्रणम्य सागर जी

साक्षात्कार - सोनल श्रीवास्तव

अराजकता, अशांति, कष्ट और शक्ति का दुरुपयोग तब उत्पन्न होता है जब मानव मन आत्मा के वास्तविक स्वरूप से विमुख हो जाता है। दसलक्षण धर्म, दस गुणों का अर्थ धार्मिक नहीं है; यह आत्मा के अंतर्निहित गुणों पर ध्यान केंद्रित करना है। जैन दर्शन में, धर्म को स्वभाव, किसी व्यक्ति या वस्तु की स्वाभाविक अवस्था के रूप में परिभाषित किया गया है। जब कोई व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप का पालन करता है, तो वह धर्म का पालन कर रहा होता है।

ये दस धर्म के विभाजन नहीं, बल्कि उसके घटक हैं। यदि एक गुण का पूर्णतः पालन किया जाए, तो अन्य गुण स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं। ध्यान केंद्रित साधना के लिए नाम अलग-अलग दिए गए हैं, ठीक उसी तरह जैसे शिक्षा में विषयों का विभाजन किया जाता है। उदाहरण के लिए: क्षमा, मर्दन,विनम्रता,आर्जव,सरलता,शौच, पवित्रता, सत्य, तप, त्याग, आकिंचन्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और संतोष।

जो व्यक्ति क्षमा का अभ्यास करता है, वह स्वाभाविक रूप से विनम्र और सरल भी बनता है, लेकिन ध्यान को तीव्र करने के लिए, इन्हें अलगअलग समझाया गया है। जिस प्रकार विद्यार्थी अनेक विषयों का अध्ययन करते हैं, लेकिन अंततः ज्ञान की एकता को प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार ये गुण एक ही सार के पहलू हैं।

यदि कोई क्षमा से शुरुआत करता है और अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहता है, तो वह आत्म-साक्षात्कार की यात्रा पूरी कर लेता है। परिवार, समाज या राष्ट्र के प्रति गलत कार्य तब होते हैं जब व्यक्ति इन गुणों से भटक जाता है। क्रोध, अहंकार, लोभ और अधिकार-बोध व्यक्ति के सच्चे स्वरूप से विमुख होते हैं। जैन दर्शन कहता है: जब मन इन दस गुणों से जुड़ जाता है, तो वह नियंत्रण में रहता है।

ये गुण बाहरी थोपे नहीं हैं; ये आत्मा का अपना स्वभाव हैं। इनका अभ्यास मन को आत्मा के साथ एकाकार करता है। दसलक्षण धर्म उत्सव का वार्षिक पालन यह सुनिश्चित करता है कि वर्ष में कम से कम एक बार लोग स्वयं से पुनः जुड़ें। अव्यवस्था, उत्पीड़न या क्रूरता तभी उत्पन्न होती है जब लोग अपने सच्चे स्वरूप से संबंध खो देते हैं। जब कोई व्यक्ति इन गुणों का अभ्यास करता है, तो वह दूसरों के लिए एक उदाहरण बन जाता है।

प्रत्येक आत्मा अनादि काल से कर्मों से बंधी हुई, शाश्वत किन्तु अपवित्र है। दस गुण आत्मा को शुद्ध करने वाले डिटर्जेंट के समान हैं। एक बार आत्मा शुद्ध हो जाने पर, वह इसी अवस्था में रहती है। प्रत्येक आत्मा अपने आप में पूर्ण है, किसी सार्वभौमिक समग्र का अंश नहीं। शुद्ध हो जाने पर, आत्मा अनंत ज्ञान और आनंद को प्राप्त करती है - यही मुक्ति है। जैन धर्म में, ईश्वर कोई एक सर्वोच्च सत्ता नहीं, बल्कि प्रत्येक मुक्त आत्मा है। इसलिए, अनंत देवता हैं; कोई भी आत्मा शुद्धि के माध्यम से ईश्वरत्व प्राप्त कर सकती है। जैन धर्म का मानना है कि प्रत्येक आत्मा में मुक्ति की क्षमता है। जो बंधनों से परे हो जाता है, वह ईश्वर बन जाता है। सभी आत्माएँ समान हैं, लेकिन कर्म के अनुसार उनकी अवस्थाएँ भिन्न होती हैं।

अस्तित्व के चार लोक हैं: मानव, तिर्यंच, पशु/वनस्पति, देव, आकाश और नरक। आत्माएँ मुक्ति तक इन्हीं लोकों में विचरण करती हैं। देव, मुक्त आत्माओं के समान नहीं हैं; वे सुख और शक्तियों का भोग करते हैं, लेकिन केवल एक मुक्त आत्मा, जो शरीर और मन से मुक्त है, को ही भगवान कहा जाता है।

आत्मा का सार चेतना है - जानने और समझने की शक्ति। यह शक्ति पुस्तकों, लकड़ी या पत्थर जैसे निर्जीव पदार्थों में विद्यमान नहीं है। निगोद, अस्तित्व की निम्नतम अवस्था से, आत्माएँ धीरे-धीरे विकसित होती हैं, विभिन्न रूपों में प्रवास करती हैं। आत्माएँ शाश्वत हैं - वे कभी नई नहीं बनतीं, केवल रूपांतरित होती हैं, ठीक पदार्थ की तरह, जिसे न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है।

क्षमावाणी पर्व

क्षमा से जागृत होता है प्रेम भाव

डॉ नरेंद्र जैन भारती, सनावद

व्यक्ति को यदि अपने जीवन को सुखी रखना है तो उसे विचारों में बदलाव करते हुए सभी जीवों के प्रति सद्भाव रखते हुए सभी को सकारात्मक रूख अपनाना होगा। "जीयो और जीने दो" की भावना को हम तभी साकार रूप प्रदान कर सकते हैं, जब बैर भाव और बदला लेने का विचार हमारे अंर्तमन से समाप्त हो। मैं जाने - अनजाने में हुई सभी गलतियों के लिए क्षमा माँगता हूँ, सभी व्यक्ति या प्राणी मुझे क्षमा करें। मैं सभी को क्षमा प्रदान करता हूँ। । जब तरह के विचार किसी के मन में चलते हैं तब वह धर्म के अत्यंत निकट रहता है क्योंकि क्षमा वीरोचित कार्य है। कायर किसी को क्षमा नहीं कर सकते, इसलिए कहा गया है क्षमा वीर रस से भोसादम अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है।

क्षमा करने से व्यक्ति की वैर की गाँठ खुल जाती है। अनंतानुबंधी कषाय समाप्त होती है तथा व्यक्ति व्यर्थ के तनाव से बचता है। क्षमा का मतलब है पुराने बैर-विरोध को समाप्त करना और धैर्य के साथ नवीन जीवन यात्रा का आरम्भ करना। बैर भाव को समाप्त कर प्रेम, सहानुभूति, और सद्भावना से आगे बढ़ना। अंतर्मन को निर्मल बनाएं रखना तथा पुराने घावों पर मल्हम लगाना। अनावश्यक किसी व्यक्ति को दुःखी करने से बचाना तथा अशुभ कर्मों से दूर रहकर शुभ भाव रखना। यह तभी संभव है जब हम अपने मन के विचारों को पवित्र तथा निर्मल रखें और सभी जीवों के प्रति मित्रता का भाव रखें।

क्षमा का भाव क्रोध को समाप्त करता है। क्षमा एक ऐसा कार्य है जो नेक नियत में सर्वोच्च माना जाता है। क्षमा हमें यह संदेश देती है कि क्षमा एक ऐसी आत्मिक शक्ति है जो हमें बताती है कि हम प्रेम करने में सक्षम है तथा सद्भावना के साथ रह सकते हैं। जो हमें आपस में बांटने जा रहे हैं, उन्हें हम अपनी विचार शक्ति से हतोत्साहित कर सकते हैं। एक नवीन ऊर्जा शक्ति को लाकर अनेक विपरीत परिस्थितियों को सामना करने की क्षमता का विकास कर आत्मोथन की ओर बढ़ सकते हैं। जीवन में भटकाव रूप विचारों का त्याग कर यथार्थ मार्ग पर चल सकते हैं। कहा गया है-

क्षमा अहिंसा की जननी है, विश्व प्रेम का है आधार।
क्षमा धर्म से निर्मित होगा,अपना एक विश्व परिवार।।

क्षमा धर्म में अनेक गुण हैं। क्षमा अहिंसा की जननी है क्योंकि क्षमा धारण किए बिना हम हिंसा के विचार को छोड़ नहीं सकते। जहां हिंसा है वहां संसार में स्नेह भाव जागृत नहीं रह सकता है। क्षमा के बिना हम संपूर्ण विश्व के लोगों को एक परिवार के समान नहीं मान सकते। यदि अहिंसा का पालन कर धर्म मार्ग पर चलना है तो क्रोध को त्याग कर, क्षमा धारण कर और मर्यादित आचरण का हमेशा के लिए त्याग कर सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर आगे बढ़ना होगा।इसी में सुख - शांति निहित है।

जबलपुर में दशलक्षण महापर्व पर श्रावक संस्कार शिविर : २२ युवाओं ने लिया ब्रह्मचर्य व्रत

जबलपुर, मध्यप्रदेशनवाचार्य श्री १०८ समयसागरजी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर भादों सुदी ५ से भादों सुदी १४ (२८ अगस्त से ६ सितंबर २०२५) तक प्रथम बार श्रावक संस्कार शिविर सानंद संपन्न हुआ।शिविर पूर्ण सादगी और बिना आडंबर के आयोजित हुआ, जिसमें तपस्वियों ने विविध तपस्याएँ कर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर — जो पिसनहारी की मढ़िया के लिए जगत प्रसिद्ध है — इस शिविर की अनूठी उपलब्धि यह रही कि उच्च शिक्षित २२ युवकों ने ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। इन्हीं में आगे चलकर कई महाव्रती बनेंगे।यह दृश्य संत शिरोमणि आचार्यश्री १०८ विद्यासागरजी महामुनिराज के श्रीचरणों में युवाओं की संयम-पिपासा की पुनः अनुभूति कराता है। आज वही धारा आचार्यश्री १०८ समयसागरजी महामुनिराज की चरणसन्निधि में प्रत्यक्ष दिखाई दे रही है।शिविर की सर्वत्र सराहना हो रही है। सभी शिविरार्थियों की साधना अद्भुत और सराहनीय रही है।यह आयोजन जैन संस्कृति में संयम और सादगी के पावन आदर्श को स्थापित करने वाला सिद्ध हुआ है।

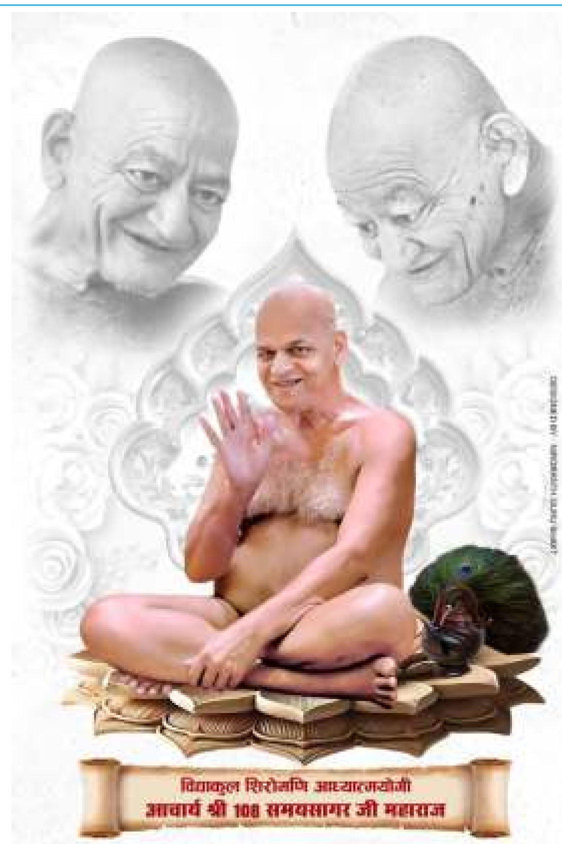

क्षमाः कमजोरी नहीं, बड़प्पन की निशानी है!
जैन धर्म और क्षमा का अमर संदेश!!

- श्रीमती प्रियंका पवन घुवारा, टीकमगढ़

जैन धर्म का कण-कण 'अहिंसा परमो धर्मः' के सिद्धांत पर आधारित है। यह केवल शारीरिक हिंसा की बात नहीं करता, बल्कि मानसिक हिंसा, क्रोध, घृणा और द्वेष को सबसे बड़ा शत्रु मानता है। शस्त्रों से पाई गई विजय अस्थायी होती है और अपने पीछे नफरत की खाई छोड़ जाती है। लेकिन क्षमा वह अस्त्र है जो शत्रुता को जड़ से समाप्त कर प्रेम के बीज अंकुरित करती है। भगवान महावीर स्वामी का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है:

"स्वयं पर विजय प्राप्त करो, क्योंकि यही सबसे बड़ी विजय है।" और क्षमा करना अपने क्रोध और अहंकार पर विजय पाने का सबसे सुंदर मार्ग है।

आज ही करें एक नई शुरुआत

"कमजोर कभी माफ नहीं कर सकता, क्षमा करना तो ताकतवर की निशानी है।" यह केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीवन का वह शक्तिशाली सूत्र है जो हमें साधारण से असाधारण बनाता है। क्षमा वह दिव्य शक्ति है जो टूटे हुए धागों को सिर्फ जोड़ती नहीं, बल्कि उन्हें पहले से कहीं अधिक मजबूत बना देती है। जैन समाज में पर्युषण के दौरान मनाया जाने वाला क्षमा पर्व संपूर्ण मानवता के लिये एक संदेश है कि मन का बोझ उतार फेको,

थमा परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मांगो-क्षमा करो और आगे बढ़ो। चलो मिलकर मैं को नहीं हम को जिताएं। जब हम किसी से क्षमा मांगते हैं, तो हमारा हृदय अहंकार के बोझ से मुक्त होकर निर्मल हो जाता है। और जब हम किसी को माफ करते हैं, तो हम उसे नहीं, बल्कि स्वयं को घृणा के अंधकार से निकालकर प्रेम के प्रकाश में लाते हैं। यह केवल एक धार्मिक औपचारिकता नहीं, बल्कि स्वयं को अतीत की बेडियों से आजाद करने का सबसे बड़ा उत्सव है।

#आत्मा के शुद्धिकरण का महापर्व

यह केवल एक त्योहार नहीं, यह आत्मा के मैल को धोकर उसे फिर से पवित्र बनाने का एक वार्षिक महायज्ञ है।

श्वेतांबर जैन समाजः पर्युषण पर्व आत्म-चिंतन और तपस्या का स्वर्णिम अवसर है। इसका शिखर "संवत्सरी" का दिन है, जब "मिच्छामी-दुक्कड़म" का दिव्य मंत्र हर दिशा में गूँजता है और दिलों को एक कर देता है। जो गत दिनों पूर्ण हुआ है।

दिगंबर जैन समाजः दशलक्षण पर्व (28 अगस्त 2025 से 6 सितंबर 2025 तक) धर्म के दस लक्षणों को जीवन में उतारने की प्रेरणा देता है। इसका समापन 8 सितंबर 2025 को "क्षमावाणी" दिवस के रूप में है, जो हमें याद दिलाता है कि समस्त धर्मों का अंतिम सार क्षमा ही है। क्षमा पर्वः एक संदेश पूरी मानवता के लिए भले ही इस पर्व की जड़ें जैन धर्म में हैं, लेकिन इसकी शाखाएं पूरी मानवता को शीतल छाया देती हैं। यह पर्व हमें सिखाता है किः गलतियां जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन उन्हें पकड़कर बैठना एक चुनाव है। क्षमा हमें सही चुनाव करने की आंतरिक शक्ति देती है। रिश्ते कांच के नहीं होते कि टूट जाएं, वे तो प्रेम और विश्वास की मिट्टी से बने होते हैं, जिन्हें क्षमा के जल से बार-बार संवारा जा सकता है। 'सॉरी' (Sorry) कहना एक शब्द हो सकता है, लेकिन "मिच्छामी-दुक्कड़म" कहना आत्मा की स्वीकृति है कि 'मेरे मन, वचन या कर्म से हुई किसी भी भूल के लिए मुझे क्षमा करें।' यह भाव हमें विनम्र और महान बनाता है।

तो आइए, इस क्षमा पर्व को केवल एक परंपरा न समझकर, इसे अपने जीवन को बदलने का एक सुनहरा अवसर बनाएं। आज ही उस फोन को उठाएं, जिससे आप बात करने में हिचक रहे हैं। आज ही उस व्यक्ति को हृदय से माफ करें, जिसकी वजह से आपको पीड़ा हुई थी। अपने मन के बोझ को उतार फेंकें और असीम शांति को अपनाएं। क्योंकि क्षमा करके आप किसी और को उपहार नहीं देते, आप स्वयं को शांति और स्वतंत्रता का सबसे बड़ा उपहार देते हैं। चलिए, इस पर्व को सार्थक बनाएं और प्रेम, सद्भाव और एक नई ऊर्जा के साथ जीवन की एक नई शुरुआत करें।

सोनागिर में छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस का ठहराव पुनः सुचारू
- दर्शानिर्थियों की मांग पर रेलवे ने लिया फैसला

मध्यप्रदेश का प्रसिद्ध जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिर, जो देशभर के जैन श्रद्धालुओं का आस्था केंद्र है, अब पुनः रेल सुविधा से जुड़ने जा रहा है। कोरोना काल से पहले यहां छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस और अमृतसर पठानकोट एक्सप्रेस दोनों का स्थाई स्टॉपेज था। लेकिन कोविड-19 के बाद इन्हें बंद कर दिया गया, जिससे दर्शनार्थियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था।रेलवे की नई घोषणा के अनुसार ट्रेन क्रमांक 18237/18238 छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस 08 सितम्बर से सोनागिर स्टेशन पर रुकेगी। यह ठहराव अभी 6 माह के लिए अस्थायी रूप से स्वीकृत किया गया है। यदि इस अवधि में प्रतिदिन 5 यात्रियों की आवक-जावक सोनागिर स्टेशन से दर्ज होती है, तो स्टॉपेज स्थायी कर दिया जाएगा।सोनागिर कमेटी के महामंत्री श्री बालचंद जैन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे यात्रा के समय टिकट सोनागिर स्टेशन का ही लें और अधिकाधिक संख्या में इस सुविधा का उपयोग करें ताकि यह ठहराव स्थायी रूप से सुनिश्चित हो सके।

भारतीय संस्कृति में सुगंध दशमी एक सकारात्मक व्रत है

प्रियंका रेशू जैन, टीकमगढ़

बसन्त ऋतु धरती को पीत वर्ण से आच्छादित करके अपनी आभा बिखेर रही है, सरसों के खिले पुष्प नर-नारियों का मन आकृष्ट कर रहे हैं, सुगंध दशमी व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है आत्मिक शुद्धि और आत्मकल्याण,अशुभ कर्मों का क्षय और पुण्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

सुगन्धदशमी व्रत चतुर्थकाल में प्रारम्भ हुआ था तब से लेकर आज तक इस व्रत का पालन बराबर होता चला आ रहा है। आज से लगभग २५७० वर्ष पूर्व तीर्थंकर भगवान् महावीर के समवसरण में राजा श्रेणिक ने साठ हजार प्रश्न गौतम गणधर से किये थे। उन्हीं प्रश्नों के मध्य उन्होंने इस सुगन्धदशमी व्रत के बारे में भी गौतम स्वामी से पूछा था कि भगवन्! सुगन्धदशमी नामक इस उत्तम व्रत को कब और किसने किया है, यह व्रत कैसे किया जाता है और इसका फल क्या है? उसी को गौतम स्वामी ने राजा श्रेणिक को बतलाया था। इस कलिकाल में भी कठिन से कठिन व्रतों का पालन करने वाले महापुरुष हुए हैं। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज ने मुनि अवस्था में "सिंहनिष्क्रीडित" आदि दुरूह व्रतों का पालन किया था। उन्होंने अपने ३५ वर्ष के दीक्षित जीवन में २५ वर्ष ६ माह उपवास में व्यतीत किए और मात्र ९ वर्ष ६ मास आहार लिया था। व्रत, नियम, संयम आदि धर्म क्रियाओं से शरीर को कष्ट तो होता है किन्तु इनसे आत्मा को पौष्टिकता- बल प्राप्त होता है और शरीर के पालन-पोषण से, उसकी साज संवार करने से आत्मा निर्बल बनती है, उसका अपकार होता है किन्तु व्रतों के महत्व को जानकर उन्हें शक्ति के अनुसार पालन करने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। सुगंध दशमी व्रत कथा के अनुसार एक कलश की स्थापना करके उसमें मन्द अग्नि जलाकर दशांगी धूप जलाना चाहिए।सात प्रकार का धान्य लेकर उससे स्वस्तिक लिखना चाहिए और उसमें दश दीपक रखकर जलाना चाहिए। मन्दिर के आँगन में स्तुतियाँ पढ़ना एवं "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह श्री शीतलनाथ जिनेंद्राय नमः" मंत्र का जाप्य ,अल्प रूप में भी भक्ति सहित की जाए तो भी वह बहुत फलदायक होती है। जंबूद्वीप के शिव मंदिर नगर में रानी मनोरमा अथार्त मदनावती ने भी इस व्रत का पालन किया, जिससे उसका शरीर सुगन्धित हो गया और उसे उत्तम सुख प्राप्त हुए। उज्जयिनी नगरी की उस गरीब ब्राह्मण कन्या दुर्गन्धा ने श्रद्धापूर्वक इस व्रत का पालन किया पुनः समाधिपूर्वक मरण करके वह कनकपुर नामक नगर में जिनदत्त नामक सेठ की पत्नी जिनदत्ता के गर्भ में आ गई। जो कोई नर अथवा नारी इस व्रत का पालन करता है, वह इस जन्म में सुख पाता है,स्वाध्याय और धर्म चिंतन करना। धूप अर्पित करने से शांत वातावरण में सकारात्मकता और स्वच्छ सुगंध का प्रसार धार्मिक और नैतिक मूल्यों और मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार आत्मिक शांति और संतुष्टि की प्राप्ति होती है। यह व्रत आत्मिक शुद्धि और आत्मकल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है।

शाश्वत भूमि श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर भक्तिभाव से मनाया गया – श्री पुष्पदंत भगवान निर्वाण कल्याणक महोत्सव

शाश्वत सिद्ध भूमि विश्व प्रसिद्ध तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर ९ वें तीर्थंकर भगवान श्री सुविधिनाथ(पुष्पदंत) स्वामी की टोंक सुप्रभ कूट जहाँ से उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया यहाँ बेदी पर प्रतिष्ठित चरण चिन्ह पर शांतिधारा, अभिषेक कर निर्वाण कांड पढ़ कर लाडू चढ़ाया गया तथा पूजन-आरती की गई। निर्वाण लाडू चढ़ाने की बोली लेने वाले लाभार्थी अतुल बघेरवाल इंदौर ने प्रथम लाडू की बोली तथा दूसरी लाडू की बोली श्री अमृत लाल जैन भोपाल ने लेकर सौभाग्य प्राप्त किया। भगवान पुष्पदंत के निर्वाण महोत्सव मनाने हजारों की संख्या में तीर्थ यात्रियों ने उपस्थित होकर निर्वाण लाडू चढ़ाया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पुजारी अशोक जैन, राधेश पाठक, गार्ड, माली आदि उपस्थित रहे।

प्रेषक - सुमन कुमार सिन्हा- शाखा कार्यालय, शिखर जी

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के ऐतिहासिक संस्मरण

- राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

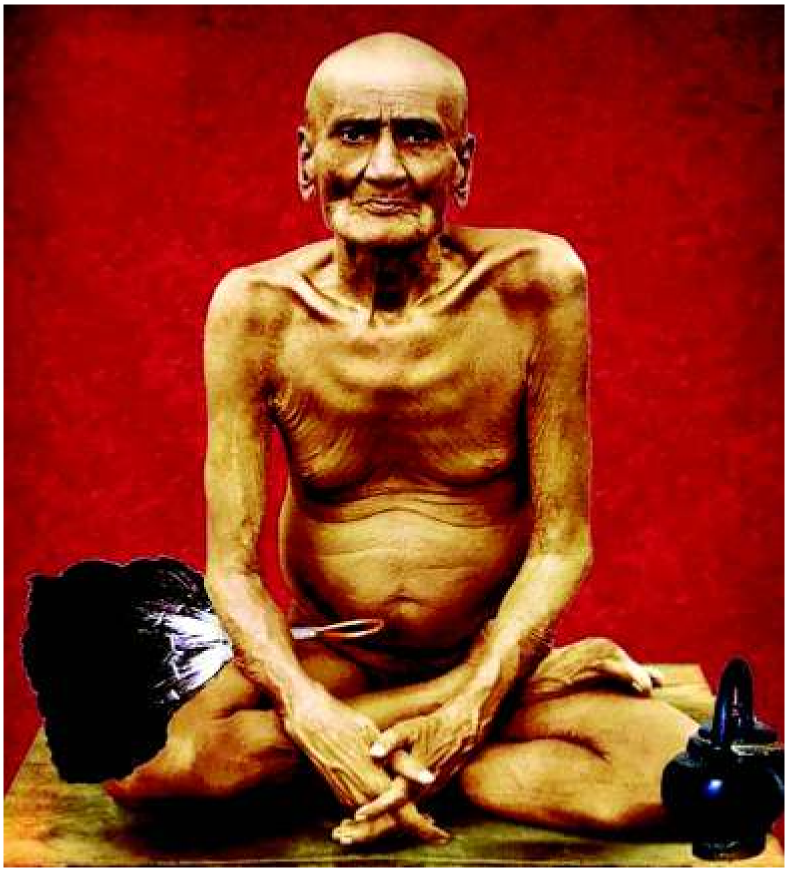

बीसवी शताब्दी के प्रथमाचार्य, चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ तपस्वी रत्न है जिनकी कठोर तपश्चर्या, अगाध विद्वता, अनुपम त्याग, आदर्श चरित्र ने लुप्त होती मुनि परम्परा और दोष पूर्ण आचरण के बीच एक ऐसा जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किया जो आर्ष परम्परा का पथ प्रदर्शक बना है।

भारतीय संस्कृति में श्रमण परम्परा की भूमि दक्षिण भारत है जहाँ आचार्य कुन्दकुन्द सहित अनेक आचार्यो ने जन्म लिया। दक्षिण भारत के कनार्टक प्रांत के बेलगांव जिले चिक्कोडी तहसील के भोजग्राम श्रावक श्रेष्ठी श्री भीमगौड़ा जी सत्यवती जी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम सातगौड़ा रखा। उनका जन्म अपने नाना के धर भोज से चार किसी दूर 'येलगुल' ग्राम में हुआ था। वे तीसरे पुत्र थे, जिन्हें ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ज्योतिषियों ने बता दिया था कि यह पुत्र परम् धार्मिक होगा।

१९२० में यरनाल में मुनिदीक्षा लेकर १९२४ में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए श्री शांतिसागरजी महाराज ने १९५५ में आदर्श समाधि को धारण कर जैन धर्म के समक्ष का आदर्श स्थापित किये।

आचार्य पद प्रतिष्ठापना के १०० वर्ष पूर्ण होने पर उनकी परम्परा के पंचम पट्टाधीश, राष्ट्रगौरव, वात्सल्यवारिधि आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज के सान्निध्य में आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी वर्ष २०२४-२५ में मनाया जा रहा है। इस निमित्त पूज्य शांतिसागरजी महाराज के ऐतिहासिक संस्मरण प्रस्तुत है।

१. आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज़ से जब उनकी जीवन गाथा जानने की प्रार्थना हुई तो उन्होंने कहा कि 'हम संसार के साधुओं में सबसे छोटे है' हमारा लास्ट नंबर है।

२. 'लोग हमें क्या जाने, हम अपने को जानते है, कि तीन कम नव कोटि मुनियों में हमारा अंतिम नम्बर है।

३. बड़े-बड़े ऋद्धिधारी मुनियों, महापुरुषों के जीवन चरित्र का पता नहीं, तब हमारे चरित्र से क्या होगा, तुम हमें सबसे छोटा समझो इतना हमने कर दिया अधिक नहीं कहना है।

४. अस्सी वर्ष की अवस्था में समाज धार्मिक उत्सव मनाकर धर्म प्रभावना करना चाहती है। अभिनंदन ग्रंथ भी प्रकाशित करने की योजना है। इस पर आचार्य श्री का कथन बहुत ही मार्मिक है - ''हमें अभिनंदन - ग्रंथ वगैरह कुछ नहीं चाहिये, उत्सव भी नहीं चाहिये, अब हमारो जीवन धड़ी में बारह धंटा पूर्ण होने में थोड़ा समय शेष है, सूरज डूबने को थोड़ा समय बाकी है। अब हमें चुपचाप आत्मा का ध्यान करना है हमें और कोई चीज नहीं चाहिए।

५. जिस प्रकार किसी महापुरुष के गर्भ में आने के बाद माँ को अद्‌भुद अहसास होता है वैसे ही माँ सत्यवती के दोहला हुआ कि एक सौ आठ सहस्त्रदल वाले कमलों से जिनेन्द्र भगवान की पूजा करुँ।

६. महान आत्माओं का सम्पूर्ण जीवन ही महान होता है। उनकी अपूर्व दयालुता थी कि वे अपने खेत में आने वाले पक्षियों को कभी उड़ाते या भगाते नहीं थे, झुण्ड के झुण्ड

उनके खेत में अनाज खाया करते थे, उन्होंने उनके पानी पीने की भी व्यवस्था कर दी थी, यही खूब दाना चुगते, पानी पीते थे । पड़ोस के खेते वाले पक्षियों को उनके खेत में भगा देते थे, लेकिन दया-करुणा के अवतार के खेत में जब फसल आती तो अन्य खेतो से अधिक अन्न उत्पन्न होता था।

७. जब अहिंसा महाव्रती तपश्चरण करते है तो हिसंक-विषैले जानवर भी उनका आदर करते है आचार्य श्री जब कोगनोली में विराजमान थे, जब ८ फुट लम्बा सर्पराज उनके शरीर से दो धण्टे तक लिपटा रहा, सर्प भीषण होने के साथ वजनदार भी था। महाराज का शरीर भी बलशाली था वे उस सर्पराज का भार बिना किसी डर के सहन किये रहे।

८. मुक्तागिरि में भी शेर आता रहता था, श्रवणबेलगोला, सोनागिरि क्षेत्र पर भी शेर आया था । आचार्य श्री कहते इसमें महत्व की कौन सी बात है ''डर किस बात का किया जाय, जीवनभर हमें कभी किसी वस्तु का डर नहीं लगा।'' यहाँ यह कथन ध्यान देने योग्य है कि ''जब तक कोई पूर्व का बैर न हो अथवा उस जानवर को बाधा न दो, तब तक वह नहीं सताता है ।''

९. प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव ने असि-मसि, कृषि शिल्प, वाणिज्य का उपदेश दिया है । कृषि के संदर्भ में आचार्यश्री का कहना था कि ''खेती का हमें स्वयं अनुभव है, उसमें परिणाम सरल रहते है उतने अन्य व्यवसाय में नहीं रहते। अन्य धंधों में बगुले की तरह ध्यान रहता है दुकानदार चुपचाप बैठा रहता है किन्तु उसका ध्यान सदा ग्राहक की ओर लगा रहता है, ग्राहक दिखा कि वह उसके पीछे लगा। इन धंधों में हजारों प्रकार का मायाचार होता है। ग्रहस्थ गद्दी पर चुपचाप बैठे हुए ग्राहक का ध्यान किया करता है । बड़ी-बड़ी गद्दी वाले हजारों लोग मायाचार पूर्वक धन को लेते है।

१०. लोक में पूज्य श्री का अनुभव अद्‌भुत था। वे कहते थे कि मनुष्य सर्वधा खराब नहीं होता दुष्ट के पास भी एकाध गुण रहता है। अत: उसे भी अपना बनाकर सहार्य का सम्पादन करना चाहिये। व्यसनी के पास भी यदि महत्व की बात है तो उससे भी काम लेना चाहिए ।

११. आचार्य श्री, अहमदनगर के पास से निकल रहे थे, कुछ श्वेताम्बर साधु ने मन में अशुद्ध भावना रखकर प्रश्न किया महाराज आप हमको क्या समझते हैं? उस समय आचार्यश्री ने कहा हम तुम्हें छोटा भाई समझते है। इससे वे साधु प्रसन्न हुए आचार्यश्री ने कहा कि पहले हममें तुममें अंतर नहीं था, पश्चात कारण विशेष से पृथकपना हो गया।

१२. मनुष्य जीवन कितना मूल्यवान है। मनुष्य भव और उसका एक-एक क्षण मूल्यवान है इसका विचार करना चाहिये। जो विषयों का उपभोग किए बिना उनको त्यागते है वे श्रेष्ठ है और जो भोगकर पश्चात त्यागते है वे मध्यम है किन्तु जो विषयों को भोगते ही रहते हैं और छोड़ने का नाम नहीं लेते है वे अधम है ।

१३. संयम में कष्ट नहीं है इस सन्दर्भ में आचार्य श्री कहते है संसार के कामों में जितना श्रम जितना कष्ट उठाया जाता है, उसकी तुलना में व्रतिक बनने का कष्ट नगण्य है।

१४. आचार्यश्री जब गृहस्थ थे जब वे अपने नगर के समीप बहने बाली वेदगंगा और दूध गंगा नदी से मुनिराजों को पार कराते थे वे कंधे पर बिठाकर दिगम्बर मुनियों को पार कराते-कराते खुद दिगम्बर बने अनेक भव्यात्माओ के मार्गदर्शक बने।

१५. मिथ्यात को हटाने में आपने कुदेवों को नही में विसर्जित कराया यह उनकी सम्यक्त्व के प्रति अद्‌भुद श्रद्धा भाव प्रदर्शित कराती है क्योकि रत्नत्रयधारी संत संत अपनी इच्छा शक्ति से मिथ्यात्व को समाप्त कराने का उपक्रम करते हैं। जैनवाडी में प्राय: सभी जैन थे लेकिन अज्ञान के वशीभूत कुदेवों की पूजा करने लगे थे।आचार्यश्री ने उन्हें अपनी देशना से समझाया और कुदेवों को गाड़ियों में भरकर में सिटा दिया। यह उनका एक महान उपकार था।

१६. णमोकार और पंच परमेष्ठी मंत्र की आराधना से सब कार्य निर्विध्न होते है यह उन्होंने वहाँ सिद्ध किया। जैनवाड़ी सहित अनेक स्थानों पर उन्होंने सर्वदंश आदि के बारे में निवारण किया एक व्यक्ति आकर बोला कि महाराज जैन मंत्र में एक और महत्व की बात ज्ञात हुई कि इसमें सर्व का विष अत्यंत शीध्र दूर होता है तथ भीषण रोगों की शीध्र उपशांति होती है ।

१७. जब आचार्य श्री की दीक्षा हुई थी तो उस समय बहुत शिथिलाचरण था, मुनि बस्ती में वस्त्र लपेट कर जाते थे और आहार के समय वे दिगम्बर होते थे। आहार के लिए

पहले से ही स्थान का चयन जैन पुजारी कर लेता था। आचार्यश्री ने इसका उन्मूलन किया फलतः उन्हें कई दिनों तक आहार नहीं मिलता था । उस समय के मुनि कहते थे ऐसा करने से काम नहीं चलेगा यह पंचम काल है इसे देखकर ही आचरण करना चाहिये, ऐसा सुनकर आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज कहते थे कि यदि शास्त्रानुसार जीवन नहीं बनेगा तो हम उपवास करते हुए समाधि मरण को ग्रहण करेंगे, किंतु आगम की आज्ञा का उलंधन नहीं करेंगे। यह उनका दृढ़ संकल्प आज भी पालन योग्य है ।

१८. सन् १९३० में धौलपुर राज्य के राजाखेड़ा में एक व्यक्ति ने बहुत से गुण्डों के साथ तलवार लेकर उनके प्राण लेने का प्रयत्न किया । तत्कालीन पुलिस ने उसे पकड़ा और पुलिस अधिकारी ने कहा कि महाराज इस हत्यारे को क्या दण्ड दिया जाये? महाराज ने कहा कि "इसे छोड़ देना चाहिये यही हमारा कहना है। जब तक तुम इसे न छोड़ोगे, तब तक हमारे अन्न जल का त्याग है ।" यह उनकी दयालुता का अनुपम उदाहरण है।

१९. निर्मल मन के धारी आचार्य श्री के समक्ष कोल्हापुर में ३५ वर्ष का एक युवक जो शास्त्र चर्चा में प्रवीण था, अकस्मात् वह गुंगा हो गया, वर्षभर गूंगा रहा लोग आचार्य श्री के पास ले गए। आचार्य महाराज ने कहा बोलो-बोलो, णमो अरिहताणं बोलो वह बोलने लगा चार दिन बार वह धर पहुंचा तो फिर गुंगा हो गया। वह पुनः-पुन आचार्यश्री के पास आया बोलने लगा १५-२० दिन रहा, पुनः बोलने लगा, रोगमुक्त हो गया ।

२०. आत्म प्रशंसा की बीमारी से सभी ग्रसित है जब भी लोग आचार्य महाराज की प्रशंसा करते वे कहते थे कि "हमारी मिट्टी की क्या प्रशंसा करते हो? हमारी कीमत क्या है।"

२१. उपदेश देने के लिए पहले स्वयं को उन बातों का पालन करना होता है । आचार्यश्री शरीर के प्रति कहते थे कि यह मकान दूसरे का है, जब मकान गिरने लगेगा तो दूसरे मकान में रहेंगे, जब तुम्हारे पास कुछ नहीं है तब जग को तुम क्या दोगे? भव-भव में तुमने धोबी का काम किया है, दुसरों के कपड़े धोते रहे और अपने को निर्मल बनाने की और तनिक भी विचार नहीं करते ।

२२. व्यवहार और निश्चय के संदर्भ में आचार्य श्री से जब पूछा गया तो उनका कथन बड़ा सुंदर व आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। आचार्य श्री कहते है "व्यवहार फूल के सदृश्य है वृक्ष में सर्वप्रथम फूल आता है। बाद में उसी पुष्प के भीतर फल अंकुरित होता है और जैसे-जैसे फल बढ़ता जाता है वैसे वैसे फूल संकुचित होता जाता है, और फल पूर्ण वृद्धि को प्राप्त हो जाता है जब पुष्प स्वयं पृथक हो जाता है। इसी प्रकार प्रारम्भ में व्यवहार धर्म होता है उसमें निश्चय-धर्म का फल निहित रहता है, धीरे-धीरे जैसे निश्चयनय रूपी फल बढ़ता जाता है वैसे-वैसे व्यवहार दृष्टि रूपी पुष्प स्वयं संकुचित होता जाता है। अन्त में निश्चय को पूर्णता होने पर व्यवहार स्वयं दूर हो जाता है। यह बहुत ही सुंदर समाधान हुआ जिसमें उन्होने स्पष्ट किया कि निश्चय की वृद्धि होने पर व्यवहार स्वयं कम होते-होते धट जाता है, छोड़ा नहीं जाता है ।"

२३. आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज जिन्हें चारित्र चक्रवर्ती कहा जाता है उनके ज्ञान का पार नहीं था वे अद्भुद थे एकबार उनके सामने चर्चा चली की आज का जमाना खराब है कि शिथिलाचार का युग है । पुराना रंग-ढंग बदल गया है। अतः महाराज को भी अपना उपदेश नये ढ़ंग का देना चाहिये । आचार्यश्री का उत्तर उपदेश आज भी प्रासंगिक हैजो बहुत ही सार्थक है -

"कौन कहता है जमाना खराब है,. तुम्हारी बुद्धि खराब है, जो तुम जमाने को खराब कहते हो। जमाना तो बराबर है। सूर्य पूर्व में उदित होता था, पश्चिम में अस्त होता है, वहीं बात आज भी है । अग्नि उष्ण थी जो आज भी उष्ण है, जल शीतल था सो आज भी शीतल है। पुत्र की उत्पत्ति स्त्री से होती थी आज भी वह बात है । गाय से बछडा पहले जोता था, यह नियम आज भी है, इन प्राकृतिक नियमों में कोई भी अंतर नहीं पड़ा है। इससे अब जमाना बदल गया है यह कहना ठीक नहीं है। जमाना बराबर है बुद्धि में भ्रष्टपना आ गया है अतः उसे दूर करने को और स्वच्छ करने को, पापाचार के त्याग का उपदेश देना आवश्यक है।" यह उपदेश बहुत ही अनुभव जन्य व ज्ञान की कसौटी पर खरा उतरने वाला है जो वर्तमान में भी मार्गदर्शी है ।

२४. महाराज श्री जब उत्तरभारत में विहार कर रहे थे तभी एक प्रसिद्ध वृद्ध पण्डितजी आचार्यश्री से बोले उत्तर की जनता वक्र प्रकृति की है वहाँ कभी दिगम्बर मुनियों का विहार हमारे जीवन में नहीं हुआ है अब आपका संध जाता है इसको देखकर विद्वेषियों द्वारा विध्न प्राप्त होगा तब धर्म पर

संकट आ जायेगा। अत: यह उचित होगा कि पहले आप किसी देवता को सिद्ध कर लेवें इससे कोई भी बाधा नहीं होगी।

आचार्य श्री ने पंडितजी को कहा कि मालूम होता है आपका मिथ्यात्व नहीं गया, जो हमें आगम की आज्ञा के विरुद्ध सलाह दे रहे है। पंडितजी ने स्पष्टीकरण की प्रार्थना की आचार्यश्री ने कहा कि क्या महाव्रती अव्रती को नमस्कार करेगा। पंडितजी बोले नहीं महाराज व्रती, अव्रती को नमस्कार नहीं करेगा।

आचार्य महाराज बोले विद्या या देवता सिद्ध करने के लिए नमस्कार करना आवश्यक है, देवता अव्रती होते है तब अप्रती को प्रणाम करना महाव्रती को क्या दोष प्रद नहीं होगा। साथ महाराजश्री ने कहा – ''डरने की क्या बात है हमारा पंचपरमेष्ठी पर विश्वास है। उनके प्रसाद से विध्न नहीं आयेगा और कदाचित पाप कर्म के उदय से विपत्ति आ जाए तो हम उसे सहन करने को तैयार है।

इस तरह आचार्य महाराज ने अपनी कई बातों को सिद्ध किया जिनागम पर दृढ श्रद्धान से अनेक विपत्तियों का समाधान किया।

उन्होंने किया उसका उपकार आज भी हम देख रहे है। उनके ही प्रताप है कि आज १५०० से अधिक पिच्छाधारी संत निर्विध्न विहार कर रहे है। महान संत जिनकी चर्या व चर्चा एक समान थी। वे आगम के चलते-फिरते ज्ञाता थे। जिन्होंने एक आदर्श समाधि को प्राप्त किया। अनेक भव्यात्माओं के समक्ष इस काल में भी मुनि बनने का मार्ग प्रशस्त किया। ऐसे महान उपकारी आचार्य के चरणों में हम उनके पंचम पट्टाधीश राष्ट्रगौरव, वात्सल वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागरजी जी महाराज के माध्यम से उनके आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी समारोह २०२४-२५ के निमित्त अपनी भावपूर्ण विनयांजलि समर्पित करते हुए जीवन में मिथ्यात्व की समाप्ति की कामना करते है।

लालकिला मैदान के दशलक्षण महापर्व में लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला की विनयांजलि

प्राचीन श्री अग्रवाल दिगंबर जैन पंचायत द्वारा लालकिला मैदान के भव्य पंडाल में मुनिश्री प्रणम्यसागरजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित दशलक्षण महापर्व में सातवें दिन बुधवार को उत्तम तप धर्म की पूजा अर्चना भक्तिभाव से की गई। इस अवसर पर लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला ने श्रीफल अर्पित कर मुनिश्री को भावभीनी विनयांजलि अर्पित की। दिगंबर मुनि के दर्शन से भावविभोर ओम बिरला ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे आचार्य श्री विद्यासागरजी के दर्शन और मार्गदर्शन का भी अवसर मिला है। मुझे जैन धर्म, दर्शन और संतों का सान्निध्य शुरू से ही मिलता रहा है। दशलक्षण महापर्व दुनिया का अनोखा पर्व है जो आत्मसाधना की पारकाष्ठा तक ले जाता है। जैन धर्म ने दुनिया को अहिंसा का संदेश दिया जो सबसे बडा धर्म है। मुनि श्री ने कहा कि व्रत, उपवास और तपस्या से ही मनुष्य का भौतिक और नैतिक विकास होता है। मनुष्य में अपना विरोध और निंदा सुनने की सामर्थ्य भी होनी चाहिए ऐसा व्यक्ति ही जीवन में उच्च पद को प्राप्त करता है, ओम बिरला जी हमारे सामने इसके साक्षात प्रतीक हैं। जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष चक्रेश जैन, अशोक पाटनी आदि ने बिरला जी का माल्यार्पण व मुकुट पहनाकर भावभीना स्वागत किया। इस मौके पर बिरला जी ने मुनिश्री की पुस्तक नवशतकम और एक कलैंडर का विमोचन भी किया। बिरला जी को **'भरत का भारत'** ऐतिहासिक चित्र भेंट किया। समारोह में श्री पीके जैन, श्री कुलदीप जैन, श्री ललित जैन, श्री पुनीत जैन, श्रीमती सुशीला पाटनी, श्रीमती कविता जैन, श्री मनोज जैन, श्री जिनेंद्र जैन, श्री कैलाश जैन, श्री नीरज जैन, श्री भरत जैन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

"जैन संस्कृत साहित्य में हनुमान"

- डॉ. प्रेमचन्द्र रांवका, जयपुर

भारतीय धर्म, संस्कृति, साहित्य और जन जीवन में "हनुमान का चरित्र" न केवल राम के साथ अपितु स्वतंत्र रूप से भी अन्यन्त प्रचलित और लोकप्रिय रहा है। जैन धर्म व साहित्य में हनुमान की गणना त्रेसठ कामदेव शलाका पुरूषों (२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती ९ बलदेव, ९ वासुदेव, और ९ प्रतिवासुदेव) में की जाती है। जैन साहित्य तो श्री राम और सीता के साथ हनुमान की चरित्र काव्यावलि से सहस्त्रधा आपूर्ण है। आचार्य रविषेण, आचार्य गुणभद्र, आचार्य विमलसूरि, महाकवि स्वयंभू, कविवर पम्प, आचार्य सकलकीर्ति, महाकवि ब्रह्म भट्टारक जिनदास, धर्मकीर्ति, भट्टारक सोमदेव भट्टारक शुभचन्द्र आदि ने एक से एक उत्तम भाव भाषा में राम चरित्र के साथ हनुमान के पावन चरित्र की गाथा गायी है। हनुमान के जीवन चरित्र पर स्वतंत्र रूप से संस्कृत में दो काव्य रचनाएँ विशेष उल्लेख्य है। एक महाकवि ब्रह्म जिनदास एवं दूसरे कविवर ब्रह्म अजित का हनुमतचरित। १५ वीं शताब्दीं के महाकवि ब्रह्म जिनदास ने तो संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में पद्मपुराण एवं रामरासों जैसे महाकाव्यों में हनुमान चरित्र की रचना कर भी वे नहीं अघायें और स्वतंत्र रूप में पुन: संस्कृत एवं हिन्दी दोनों में हनुमच्चरित्र एवं हनुमन्त रस जैसे महाकाव्यों की रचना की। इससे प्रतीत होता है कि जैन धर्म एवं समाज में श्री राम सीता के साथ हनुमान का चरित्र भी उतना ही प्रिय रहा है। यहीं कारण है कि प्रत्येक जैन मन्दिर के शास्त्र–भण्डार में पद्मपुराण (अपरनाम रामपुराण) की अनेक प्रतियाँ मिलती हैं। वहाँ देव–दर्शन के साथ पद्मपुराण का स्वाध्याय भी अपेक्षित है। ६ वीं शताब्दीं के आचार्य रविषेण के पद्मपुराण के आधार पर ही परवर्ती कवियों ने रामचरित पर काव्य रचनाएँ की। प्रस्तुत आलेख में स्वतंत्र रूप से निबद्ध ब्रह्म जिनदास के हनुमच्चरित्र के (हस्तलिखित प्रति डूगरपुर व उदयपुर) उपलब्ध न होने से ब्रह्म अजित के हनुमच्चरित्र को प्रतिपाद्य बनाया गया है।

१७ वीं शताब्दीं के ब्रह्म अजित विरचित, अनुष्टुप, बसन्ततिलका, शार्दूल विक्रीडित, शशस्थ, शालिनी, दोघक, नाराच, भुजंग प्रयात, द्रुत विलम्बित, उपजाति, स्नग्धरा आदि छन्दों के २००० श्लोको में निबद्ध "हनुमच्चरित" एक प्रबन्ध महाकाव्य है, जो आदि से अन्त तक पाठकों को तन्मयी बनाये रखता है। आचार्य रविषेण के पद्मपुराण को इस चरित्र कथा का आधार बनाया गया है। स्वयं कवि के अनुसार यद्यपि –

अस्ति में चैक आधार : परमेष्ठि : प्रसादत: |
तेन संजायते सर्व, चिंततार्थस्य साधनं | | 31 | |
विलोक्य रविषेणस्य, सूक्तिं सम्मद कारिर्णी |
श्री शैलस्य कथा सोऽहं प्रवक्ष्यामिस्व सिद्धयो | |32 | |

आचार्य रविषेणानुसार – भरत क्षेत्र के मध्य में विजयार्ध नामक एक विशाल पर्वत था। जिसकी दो श्रेणियाँ थीं – उत्तर श्रेणी और दक्षिण श्रेणी। इन दोनो श्रेणियों की राजधानी क्रमश: अलकावती और रथनूपुर थी। इन श्रेणियों में विद्याधरों का निवास था। वे यद्यपि मनुष्य थे। किन्तु विद्याओं की सिद्धि किया करतें थे। अत: उनके पास विमान और अद्भुत शस्त्रास्य थे। इन विद्याधरों में अनेक जातियॉं थी। राक्षस, वानर, ऋक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदि। इन्हें जातीय अभिमान था और ये भूमि पर रहने वालों को भूमिगोचरी कहते थे तथा उन्हें हीन दृष्टि से देखते थे। यहाँ तक कि ये भूमि गोचरियों को अपनी कन्या देना अपना अपमान समझते थे। यद्यपि अनेक भूमिगोचरी राजाओं ने अपने बाहुबल द्वारा विद्याधर –कन्याओं के साथ विवाह किया था।

विजयार्ध की दक्षिणश्रेणी के मेघपुर नगर के अधिपति श्री कंठ को लंका नरेश कीर्तिशुभ में जो श्री कंठ का बहनोई था। शत्रुओं के उत्पात से बचने के लिये वानर द्वीप दिया था। श्री कंठ ने वहा जाकर नगर बसाया और सुख पूर्वक रहने लगा। इस द्वीप में वानर बहुत थे। श्री कण्ठ तथा उसके नगर वासी उन वानरों से अपना खुब मनोंरंजन किया करते थे तथा उनको पालते भी थे। उसी के वंश में आगे अमरप्रभ राजा हुआ उसने अपनी ध्वजा, मुकुट, छत्र, तोरण, और द्वारों पर वानरों के चिन्ह खुदवा दिये तब से सारे नगर वासी बन्दरों को आदर की दृष्टि से देखने लगे। इसीलिये उनके वंश का नाम वानर वंश पड़ गया।

<u>हनुमान का वैराग्य परक चिन्तन –</u>

अधारस्ताचल मारूढ़ो दिवसाधिपतिस्तदा।
तम: प्रकटतामार दुर्ज्जनस्येन चेष्टितं।।१२।।
तदृष्टवा वायुतनय: स्वांते चिंता पराभवत्।
उद्धों वैचित्रतां पवय संसृतौ क्षण भंगुरे।।१३।।
उत्पत्तिं नवयतामेति संसारे सार वज्जिते।
विश्वास: की दृघस्तिस्भ विनषस्य विषस्य: ।।१४।।
समया पलिका पक्ष मास संवत्सरादिषु।
नपयंति क्षणत: प्राणान् जीवानां वषा वर्त्तिनां।।१५।।
शलाका पुरूषा: सर्देव गता कालेन केवलं।
अन्मेषा का कथा लोके क्षुद्रशक्ति विद्यायिमां।।२१।।
स्व सार्दृ कोपिनायाति न यात्तपर जन्मनि।
विभिन्न पथगाा: सर्वे बांधना: सरिदंतु स्तप।।२३।।
मरणे दु:संहे रोगे समायते शरीरिणां।
नाता नैव क्वचित्कोपि देवेन्द्राविभहामना:।।२६।।
कारागृहों परं राज्यं त्यजामि यदिनीप्रभ।
तत: पक्षचाज्जराध्वंस: किं करोमि परावश:।।३१।।
यदि शुद्धभवाजोति गृहमेधी गृहाक्षेम।
वृषभादि मध्याभागै: कथं सत्यंज्यते गृहं।।४४।।
नित्यमायु: क्षयंयाति त्राता कोश्रप च हायते।
युष्माभियम्यिते मृत्युस्तत तिष्मभ्यहं गृहे।।५३।।

आपने पुत्र को शासन भार संभाल कर संभवत: जैनेश्वरी दीक्षा ले ली।

योग साधन के कैवल्य पाकर, जनसामान्य को संबोधन कर मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया।

वंशास्य: – संबोध सर्वान्जगतीतलेस्मिन् सद्रव्य सत्वान् यतिराद्हनुमान।

छिध्वा च कर्म्माणि हि शेषकानि निर्वाण शैले किल मुक्तिमाप।।

कवि का आशीर्वचन:– य: पहेच्चरितमेतदुत्तमं पाठयत्यपिपरं कर शिष्यान।

य: श्रृणेति खलु भावमेचाव: सोश्रुतेसुखमनुत्तरं दिवि।।
इदं शैलमानस चरितं दुरिताप हं।
रचितं भृगु कछे च क्षीने मन्दिरे।। ५४।।

'डूबो मत, लगाओ डुबकी' का लोकार्पण सम्पन्न

रहली - अध्यात्मविद्या शिरोमणि आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के मंगल शुभाशीष से निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागर जी महाराज, मुनि श्री चन्द्रसागर जी महाराज, मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज, एलक श्री उद्यमसागर जी महाराज एवं एलक श्री गरिष्ठसागर जी महाराज और संघस्थ ब्रह्मचारी द्वयों का ससंध वर्षायोग श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटनागंज के बड़े बाबा जी के पादमूल में रहली नगर (सागर) म.प्र. में इस वर्ष सानन्द सम्पन्न हो रहा है।

इसी बीच ३दसलक्षण पर्व३ के पावन प्रसंग पर ३उत्तम सत्य धर्म३ के दिन संतशिरोमणि दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की लेखनी से प्रसूत काव्य संग्रह ३डूबो मत, लगाओ डुबकी३ का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। यूँ तो इस कृति का तीन-चार बार पूर्व में प्रकाशन हो चुका था किन्तु इस बार का प्रकाशन अपने आप में अद्भुत व विशिष्ट है। कारण, आचार्य भगवन्त के हाथों से आलेखित पाण्डुलिपि की डायरी स्वरूप प्रति श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर (दमोह) मध्यप्रदेश में मुनिवर श्री प्रभातसागर जी महाराज को विगत वर्ष प्राप्त हुई थी। आचार्यवर्य के हस्तलेख से ही लिखी होने की प्रामाणिकता पुष्ट हो जाने पर निर्यापक श्रमण मुनि श्री संभवसागर जी महाराज से उन्होंने भावना रखी कि आचार्य भगवान् भले ही आज हम सबके बीच में सशरीर उपस्थित/विराजमान नहीं हैं किन्तु यदि यह रचना उनकी हस्तलिपि में ही प्रकाशित हो जाए तो साहित्य जगत् जहाँ आचार्यश्री के हस्तलेख का परिचय पा लेगा वहीं काव्य रस के रसिक इसमें गुम्फित कविताओं का रसास्वदन भी कर सकेंगे।

'हिरण नदी के तीर पर-कुण्डलगिरि की छाँव में' स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलगिरि-कोनीजी, तहसील-पाटन, जिला-जबलपुर, मध्यप्रदेश में प्रवास काल के दौरान सन् १९८१ में आत्मिक सरोवर में डुबकी लगाकर उसमें से अन्तर्निहित आनन्द का साक्षात्कार करके आचार्य भगवन्त गुरुवर श्री विद्यासागर महाराज ने ४२ मुक्त छन्द में रचनाएँ सृजित की थीं। काव्य यात्रा का सूत्रपात करके आचार्यश्री जी के द्वारा विषयानुरंजन में फँसे हुए जनों को चिदानन्द की यात्रा कराने रूप उपक्रम है यह काव्य यात्रा। 'जहाँ न जाए रवि-वहाँ जाए कवि' लोकोक्ति को अपूर्णता से अभिनवपना प्रदान करके आचार्यवर्य ने इसे पल्लिवत करके नवीनता प्रदान कर 'जहाँ न जाए रवि, वहाँ जाए स्वानुभवी' रूप में सार्थकता प्रदान की है।

अपने दीक्षा-शिक्षा गुरु आचार्यवर्य श्री ज्ञानसागर जी की कृपा-प्रसाद से सृजित इस काव्य संग्रह 'डूबो मत, डुबकी लगाओ' को उन्हीं के उभय कर-कमलों में समर्पित करते हुए आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने इसकी प्रस्तावना रूप 'अमृताक्षर' में अपने मनोभावों को अभिव्यक्त किया है।

जैन विद्यापीठ, भाग्योदय तीर्थ परिसर, सागर-४७०००२, मध्यप्रदेश (मो. ९३४०४६४६३२) से प्रकाशित ४५ रुपये मूल्यवाली इस रचना का प्रथम संस्करण के रूप में जुलाई,२०२५ में श्री कल्याणमल झांझरी, कोलकाता व मुनि श्री प्रभातसागर जी महाराज के सत्प्रयासों से ९६ पृष्ठीय 'गुरुवर की डायरी' को प्रकाशित हो पाने का अवसर प्राप्त हुआ है। आचार्यश्री के मनोभावों को इस कृति में पाठक न केवल पढ़ पा रहे हैं बल्कि आचार्यवर्य को स्पर्शित करने एवं उनको अपने निकट साक्षात् अनुभूत कर पाने का अपूर्व अवसर भी इसके माध्यम से पा रहे हैं।

रहली नगर के सुश्रावक अजितकुमार नवीनकुमार जैन (बलेहवाले), स्वतंत्रकुमार वीरेन्द्रकुमार जैन (सिमरिया वाले), डॉ. अजय जैन (जूनावाले), सुरेन्द्रकुमार स्वतंत्रकुमार जैन (केवलारीवाले), देवेन्द्रकुमार जैन (चाँदपुरवाले), दिनेश जैन शिक्षक, जिनेन्द्र जैन (बरौदावाले), ताराचंद जैन (जूनावाले), ललित जैन मुन्ना (चारटौरियावाले) एवं अनिल सिंघई के द्वारा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, समालोचकों, साहित्यकारों, विशिष्ट लाइब्रेरियों, समीक्षा जगत् की पत्रिकाओं, शोध संस्थानों तथा शोध केन्द्रों आदि तक लोकार्पित करके उन तक पहुँचाने का एवं साहित्य जगत् के सुधी पाठकों तक भी पहुँचाने का संकल्प किया है। यह उपक्रम यथाशीघ्र मूर्तरूप धारण करके 'डूबो मत, लगाओ डुबकी' कृति की साहित्यिक यात्रा प्रारम्भ होने जा रही है।

लोकार्पण समारोह का कुशल संचालन ब्रह्मचारी रजनीश भैया तथा सुरेन्द्र जैन 'आजाद' रहली ने सम्पन्न कराया।

आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी वर्ष के अवसर पर

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर व्यक्तित्व- कृतित्व राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सफलतापूर्वक हुई संपन्न

आगम साधु के नेत्र हैं : आचार्य श्री वर्द्धमानसागर

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी वर्ष के अवसर पर बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर व्यक्तित्व- कृतित्व राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य वर्द्धमानसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य व डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर के संयोजकत्व में जैन नसिया, भगवान महावीर मार्ग, टोंक , राजस्थान में दिनांक 23 व 24 अगस्त 2025 को वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्द्धमानसागर वर्षायोग समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज टोंक के तत्वावधान में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। विद्वत् संगोष्ठी में देश के मूर्धन्य मनीषी विद्वानों ने अपने आलेखों के माध्यम से बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के अवदान को रेखांकित किया।

23 अगस्त को प्रातः 8 बजे से उदघाटन सत्र पुण्यार्जक परिवार द्वारा ध्वजारोहण व मंगल कलश की स्थापना के साथ शुरू हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत- अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्रि-परिषद ने की। संचालन डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया। इस सत्र में प्रोफेसर फूलचन्द्र प्रेमी वाराणसी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन भारती बुरहानपुर, डॉ. अनेकांत जैन दिल्ली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरा सत्र दोपहर में प्रोफेसर फूलचन्द्र प्रेमी वाराणसी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संचालन डॉ. सोनल जैन दिल्ली ने किया। इस सत्र में प्रोफेसर जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार जैन टीकमगढ़, प्रोफेसर नलिन के शास्त्री दिल्ली, प्रोफेसर जयकुमार उपाध्ये दिल्ली, पंडित विनोद कुमार जैन रजवांस, डॉ आनंद प्रकाश जैन कोलकाता, डॉ. ज्योतिबाबू जैन उदयपुर, डॉ. पंकज जैन इंदौर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

24 अगस्त को प्रातः तृतीय सत्र प्रोफेसर जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संचालन डॉ. पंकज जैन इंदौर ने किया। इस सत्र में डॉ चिरंजी लाल बगड़ा कोलकाता, डॉ. शीतलचंद्र जैन जयपुर , डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, ब्र. जयकुमार निशान्त टीकमगढ़, डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दोपहर में चतुर्थ सत्र डॉ. शीतलचंद्र जैन जयपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। संचालन डॉ. आनंद प्रकाश जैन कोलकाता ने किया। इस सत्र में डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, डॉ. आशीष जैन आचार्य सागर, डॉ. सुधीर जैन बारामती, डॉ. आशीष जैन (बम्होरी) दमोह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी आलेखों की पुस्तक का हुआ भव्य विमोचन : इस मौके पर 24 अगस्त को चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी वर्ष के अवसर पर बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर व्यक्तित्व- कृतित्व राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत आलेखों की पुस्तिका का भव्य विमोचन संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों द्वारा किया गया। पुस्तक का संपादन डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया है। पुस्तक की प्रथम प्रति आचार्यश्री के कर कमलों में भेंट की गई इसके बाद सभी को पुस्तक प्रदान की गई।

23 अगस्त को शाम को आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के साथ विद्वानों की अंतरंग चर्चा हुई जिसमें अनेक बिंदुओं पर चर्चा हुई।

इस अवसर पर वात्सल्य वारिधि पंचमपट्टाचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज ने कहा कि साधु के नेत्र आगम है, साधु को आगम अनुसार चलना चाहिए ।साधु का लक्षण परिग्रह रहित , कषाय रहित होकर स्वाध्याय प्रेमी होना चाहिए।

शेष पृष्ठ 19 पर ......

दक्षिण के भामाशाह एम.के.जैन चेन्नई धर्मचक्रवर्ती की उपाधि से हुए सम्मानित

सरिता जैन फाउण्डेशन चेन्नई द्वारा 1 करोड़ से अधिक की सहायता राशि वितरित की

दक्षिण भारत के भामाशाह एम.के.जैन चेन्नई को धर्मचक्रवर्ती की उपाधि से सम्मानित करते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सांसद कनिमोझी करुणानिधि

चेन्नई । दक्षिण भारत के भामाशाह श्री एम.के.जैन चेन्नई को उनके सामाजिक एवं धार्मिक अवदान के लिए उन्हें धर्मचक्रवर्ती की उपाधि से सम्मानित किया गया । १३ अगस्त २०२५ को चेन्नई में हुए एक भव्य आयोजन में पूर्व केन्द्रीय मंत्री, वर्तमान सांसद डीएमके की डिप्टी जनरल सेक्रेटरी कनिमोझी करुणानिधि के मुख्य आतिथ्य में तमिलनाडू सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री सुब्रमण्यम, तमिलनाडू शासन की वेलफेयर सचिव श्रीमती एस.मधुमती (आईएएस), श्री आर.सुधन रिटायर्ड आईएएस सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति में यह उपाधि दानवीर भामाशाह श्री एम.के.जैन चेन्नई को प्रदान की गई ।

उक्त सम्मान से संपूर्ण जैन समाज में हर्ष और प्रसन्नता की लहर व्याप्त है । उल्लेखनीय है कि श्री एम.के.जैन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, तमिलनाडू तीर्थक्षेत्र कमेटी, दक्षिण भारत दिगम्बर जैन महासभा, श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला, श्री क्षेत्र अरिहंतगिरी आदि अनेक संस्थाओं में प्रमुख रुप से कार्यरत होकर उल्लेखनीय योगदान दे रहे है । आपके द्वारा तमिलनाडू के अनेक तीर्थो का जीर्णोद्धार व पूजा पाठ की समुचित व्यवस्था अनेक वर्षो से संचालित की जा रही है । धार्मिक व सामाजिक कार्यो में आपका योगदान अतुलनीय है ।

श्रीमती सरिता एम.के.जैन और उनके परिवार द्वारा संचालित श्री सरिता जैन फाउण्डेशन चेन्नई द्वारा विगत १५ सालों से दिव्यांग विद्यार्थियों और उनके परिवार को छात्रवृत्ति के माध्यम से मदद की जा रही है । दिव्यांग छात्रों व दिव्यांग माता-पिता के संतान छात्रों का संगठन तमिलनाडू डिफरेंटली एबल्ड फेडरेशन चैरिटेबल ट्रस्ट के साथ मिलकर श्रीमती सरिता-एम.के.जैन द्वारा इस वर्ष कुल ९१८ दिव्यांग विद्यार्थी व दिव्यांग माता-पिता के पुत्र-पुत्री विद्यार्थियों को एक करोड़ रुपये से अधिक की सहायता राशि प्रदान की गई है । यह कार्य दिव्यांग छात्रों के लिए एक ऐसा उपहार है जिसके माध्यम से दिव्यांगजन अपने जीवन में शिक्षा की मशाल को जिंदा रखकर अपने जीवन को समुन्नत बनायेंगे ।

उनके कार्य की सराहना करते हुए तमिलनाडू डिफरेंटली एबल्ड फेडरेशन चैरिटेबल ट्रस्ट ने इस महान कार्य के प्रति सरिता जैन फाउण्डेशन का आभार व्यक्त किया है ।

दिव्यांग सेवा सरकार के साथ हर नागरिक का कर्तव्य - सरिता एम.के.जैन

अपने हर कार्य को विशेष रुप से करने वाले श्रीमती सरिता-एम.के.जैन चेन्नई जिन्होंने अपने धन का सदुपयोग कर भारतवर्ष की जैन समाज को गौरवान्वित किया है । ऐसे समाजसेवी दंपत्ति से जब पूछा गया तो उन्होंने कहा कि पात्र व्यक्ति को दान देने में उन्हें अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव होता है । उन्होंने अत्यंत सरल और निर्मल मन से कहा कि समाज के हर वर्ग के विकास का उत्तरदायित्व सरकार के साथ-साथ हर एक नागरिक का कर्तव्य भी है और हमने अपने इसी नागरिक कर्तव्य को पूर्ण कर दिव्यांगजनों की सेवा में अपना योगदान दिया है । जिससे दिव्यांगजन अपने भविष्य को उज्जवल बनाकर समाज कल्याण और राष्ट्रहित में अपना कार्य करते रहेंगे ।

उल्लेखनीय है कि श्रीमती सरिता-एम.के.जैन भारतवर्ष की प्रथम महिला है जिन्हें गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव २०१८ व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुंबई की प्रथम महिला राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने का गौरव मिला । आपको संपूर्ण देश के प्रमुख आचार्य, मुनिराज, आर्यिका माताजी, भट्टारक, त्यागी वृन्द, विद्वतजन प्रमुख श्रेष्ठीजनों का आशीर्वाद व शुभकामनाएं प्राप्त है ।

श्री सरिता जैन फाउण्डेशन का कार्य विगत अनेक वर्षो से जारी है जो सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में एक मिशाल है । आपके द्वारा आचार्य शांतिसागरजी महाराज की पावन स्मृति में छात्रवृत्ति के रुप में आर्थिक सहयोग अनेक वर्षो से किया जा रहा है जिससे हजारों छात्र लाभान्वित हुए है । आपके द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्य जैन समाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है । साथ ही आपकी सहजता, सरलता और समन्वय व्यवहार उन्हें जैन जगत का शिरोमणि व्यक्तित्व निरुपित करते है ।

देश के प्रमुख समाजजनों ने श्री एम.के.जैन सा. और श्रीमती सरिता जैन चेन्नई को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देते हुए उनके कार्यो की हार्दिक अनुमोदना व आभार व्यक्त किया है ।

राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

पृष्ठ 17 से शेष......

सभी को समाज को जोड़ना चाहिए, यदि समाज जोड़ नहीं सकते तो तोड़ने का कार्य नहीं होना चाहिए। वर्तमान में समाज को संगठित होना बहुत जरूरी है। सभी को प्रेम ,वात्सल्य भाव रखकर समाज को संगठित करना चाहिए।

वर्तमान में व्याप्त अनेक विसंगतियों के लिए अपना समन्वय सूत्र बताते हुए कहा कि हम अपनी छोड़ेगे नहीं,और आपकी बिगाड़ेंगे नहीं। यह सूत्र हमने जीवन में 57 वर्षों के संयम जीवन में अपनाया है और शिष्यों को भी यही प्रेरणा देते हैं। उन्होंने विद्वानों से कहा कि अपनी ठेस बचाने के लिए आगम को ठेस नहीं लगना चाहिए।

प्राचीन आगम परंपरा में परिवर्तन, बदलाव करने से समाज में विवाद और विघटन होता है। साधु का हमेशा उदासीन भाव रहना चाहिए। ट्रस्ट मंदिर संपति का निजी उपभोग हानिप्रद हैं। उन्होंने कहा कि एकल विहार का मतलब अपनी प्रभावना करना है, इससे धर्म की प्रभावना नहीं होती है। साधु संघ सहित विहार करे, एकल विहार न करे।

आचार्यश्री ने कहा कि पहले मकान कच्चे होते थे लेकिन उनमें रहने वाले श्रावक पक्के होते थे लेकिन आज मकान पक्के हैं परंतु श्रावक कच्चे।

आचार्य श्री शांतिसागर जी श्रमण साधु परम्परा कुल के पितामह थे हैं और रहेंगे ।आचार्यश्रीआत्म विद्या के महाज्ञानी थे उनमें आत्मज्ञान बहुत था ,आत्मा ही सर्वश्रेष्ठ है, वह अनासक्ति के सर्वोच्च शिखर पर रहे। गृहस्थ अवस्था से वह अनासक्ति और निष्प्रही रहे, उनमें बचपन से वैराग्य और चारित्र था , वह अपने ज्ञान से सभी को वह स्वाध्याय की प्रेरणा देते थे। हम उनके जैसी तपस्या नहीं कर सकते किंतु समन्वय का गुण, संघ परंपरा अनुसार आज भी विद्यमान हैं।

इस अवसर पर मुनि श्री हितेंद्रसागर जी महाराज ने आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को चारित्र चक्रवर्ती की उपाधि की उपादेयता के बारे में अपने ओजस्वी प्रवचनों में बताया। उन्होंने कहा कि बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी ने मुनिचर्या का पुनरूत्थान, चतुर्विध संघ की स्थापना, जिनालय संरक्षण, गृहीत मिथ्यात्व का त्याग, जैन मंदिर संकट निवारण आदि अनेक ऐतिहासिक कार्य किए। उन्होंने कहा कि विद्वानों में वह पावर है जिसके पावर से पूरे समाज को एक झंडे के तले ला सकते हैं।

विद्वानों का हुआ सम्मान: इस अवसर पर सभी विद्वानों का वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्द्धमानसागर वर्षायोग समिति एवं सकल जैन समाज टोंक के पदाधिकारियों अध्यक्ष धर्मचंद जैन दाखिया, भागचंद जैन, संयोजक कमल आंडरा, अशोक झिराणा, राजेश जैन, अनिल कंटान, सुमित दाखिया, अमित दामुनिया, लोकेश जैन आदि ने प्रमाण पत्र, माला, तिलक, स्मृति चिन्ह, साहित्य, दुप्पट्टा आदि के द्वारा भव्य सम्मान किया।

इस मौके पर टोंक जिला प्रमुख श्रीमती सरोज बंसल प्रमुख रूप से उपस्थित रहीं। संगोष्ठी में स्थानीय विद्वान राजीव जैन शास्त्री, अनिल जैन शास्त्री, रजनीश शास्त्री लावां आदि भी उपस्थित रहे।

संगोष्ठी को सफल बनाने में स्थानीय प्रभारी सुमित दाखिया, अमित छमुनिया, अनिल कंटान, अंशुल आरटी, सुनील जैन आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा।

इस मौके पर आचार्यश्री के संघ में सल्लेखनारत मुनि श्री चिन्मय सागर जी महाराज के दर्शन करने विद्वान पहुंचे और संवाद किया।

आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी महोत्सव पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमानसागर जी की प्रेरणा से पूरे भारत में वर्ष मनाया जा रहा है उसी उपलक्ष्य में इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

श्री आदिनाथ महाराज दि.जैन मंदिर, सोलापुर में संगोष्ठी

जैन समाज की एकता का दिया संदेश

प्रा. धनंजय विजयकुमार शहा,
वालचंद कॉलेज सोलापूर,महाराष्ट्र

आदिनाथ महाराज दि. जैन मंदिर, सोलापुर के अध्यक्ष श्री सुनील जी गांधी इनके मार्गदर्शन पर महावीर सांस्कृतिक भवन में मंदिर के ट्रस्टी धर्मानुरागी अरविंद शहा, श्री राजकुमार कोठा डीया की अध्यक्षता में 'जैन समाज की एकता : समय की माँग' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इस एक दिवसीय संगोष्ठी में वर्तमान परिस्थिति में जैन समाज की एकता की आवश्यकता विषय पर विभिन्न विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। भोपाल से पधारे पं. राजू जैन जी ने विभिन्न दृष्टांतों द्वारा जैन समाज को आपसी मतभेद भूलने का अनुरोध किया। पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर विश्वविद्यालय, सोलापुर के सीनेट सदस्य तथा साहित्यिक प्रा. डॉ . धन्यकुमार बिराजदार ने जैन प्राचीन परंपरा पर प्रकाश डालते हुए राजा- महाराजाओं के योगदान पर अपनी बात रखी। उन्होंने धर्म, तीर्थक्षेत्र, मुनियों, त्यागियों, साध्वियों पर हो रहे आक्रमण को जैन धर्म की अस्मिता पर होनेवाला आक्रमण कहते हुए श्वेतांबर-दिगंबर तथा विभिन्न पंथ भेद के बदले सकल जैन समाज को एक होने का अनुरोध किया। प्रा. बिराजदार ने देश के आर्थिक विकास में सकल जैन समाज के योगदान पर बल देते हुए अहिंसा की रक्षा के लिए एकता रूपी बल पर जोर दिया। प्रा. मनीष शहा जी ने समाज के मुखिया को सर्वव्यापी विचार करते रहने, विभिन्न मंदिरों के पदाधिकारियों में आपसी सहयोग, एकता पर बल देकर रोटी-बेटी अर्थात पंथ भूलकर आपस में ही विवाह के संबंध-रिश्ते जोड़ने पर बल दिया।

एक दिवसीय संगोष्ठी मेंसोलापूर के प्रसिद्ध सी. एम. ए. शिरिष शहा ने जैन दर्शन अनेकांतवाद, अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य आचरण करने से आपसी मनमुटाव मिटने की बात रखते हुए एकता के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने की सलाह दी। "हम महावीर को मानते हैं महावीर की नहीं मानते" ऐसा क्यों कहते हुए एकता के अभाव में धर्म लुप्त होने की चिंता व्यक्त कीतथा एकता के लिए आवश्यक उपाय प्रतिपादित किए।

एक दिवसीय संगोष्ठी का प्रास्ताविक तथा सूत्रसंचालन वालचंद महाविद्यालय के प्राणी मित्र एवं पर्यावरण तज्ञ धर्मानुरागी प्रा. धनंजय शहा ने किया,जैन युवा संघटनाहर एक गाव मे होनी चाहिये ,तथासामाजिक एकता के लिए और समस्या सुल झाने के लिए जैन मुनि 'आचार्य और आर्यिका तथा माताजी इन से चर्चा करके सलाह लेनी चाहिए।

अध्यक्षीय मंतव्य में धर्मानुरागी अरविंद शहा ने शोधपत्र प्रस्तुत करने वालों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए भविष्य में भी सोलापुर सकल जैन समाज की एकता बरकरार रहने का विश्वास दिलाया। भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी के राष्ट्रीय जिर्णोद्धार समिती के चेअरमन समाज गौरव श्रावक रत्न धर्मानुरागी अनिल जमगे ने भी अपने शोधपत्र द्वारा संगोष्ठी हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए सकल जैन समाज की एकता महत्त्व प्रतिपादित किया।

इस अवसर पर मंदिर के अध्यक्ष धर्मानुरागी सुनील गांधी, धर्मानुरागी राजकुमार कोठाडिया, सचिव प्राचार्य आशितोष शहा, उदयकुमार गांधी, प्रदीप शहा, निशा गांधी, डॉ. वृषाली शहा, पल्लवी मेहता, सायली शहा, विभिन्न पंथों के पदाधिकारी तथा जैन श्रावक-श्राविका बहुसंख्य में उपस्थित थे।

क्रोध समस्या है, क्षमा हर समस्या का जीवंत समाधान -आचार्य श्री विमर्शसागर जी

दिगम्बराचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज ने उत्तम क्षमा धर्म पर कहा कि पर्व का अर्थ है "जोड़" और दशलक्षण महापर्व मानव को उसके आत्मगुणों से जोड़ता है। आत्मा का स्वभाव क्षमा है, किन्तु मनुष्य क्षमा को भूलकर क्रोध का प्रदर्शन करता है और स्वयं दुखी होता है। वास्तव में क्षमा धर्म का पालन वीरों का कार्य है। क्रोध कभी भी समाधान नहीं, बल्कि स्वयं एक समस्या है। क्षमा हर समस्या का जीवंत समाधान है।

क्रोध आत्मा का शत्रु है- उन्होंने स्पष्ट किया कि धर्म हमेशा धर्मी आत्मा के साथ रहता है। जब आत्मा में क्षमा का अनुभव होता है, तो वही क्षण आत्मा के निकट होने का है। क्रोध आत्मा का शत्रु है और यह सबसे पहले विवेक पर आक्रमण करता है। क्रोध क्षणिक होता है, पर उसका परिणाम जीवनभर का पश्चाताप होता है।

कुछ ही समय में क्रोध शांत हो जाएगा- आचार्य श्री ने क्रोध को जीतने का उपाय बताते हुए कहा कि जब कोई निमित्त बने तो मौन हो जाएं, और यदि स्थिति न संभले तो स्थान बदल लें। कुछ ही समय में क्रोध शांत हो जाएगा। उन्होंने कहा कि क्षमा में आत्मा ढलने से न केवल वर्तमान सुधरता है, बल्कि भव का क्षय करके आत्मा भगवान भी बन सकती है।

श्री दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर

कटरा मेंदनीगंज, जिला प्रतापगढ़, उत्तरप्रदेश

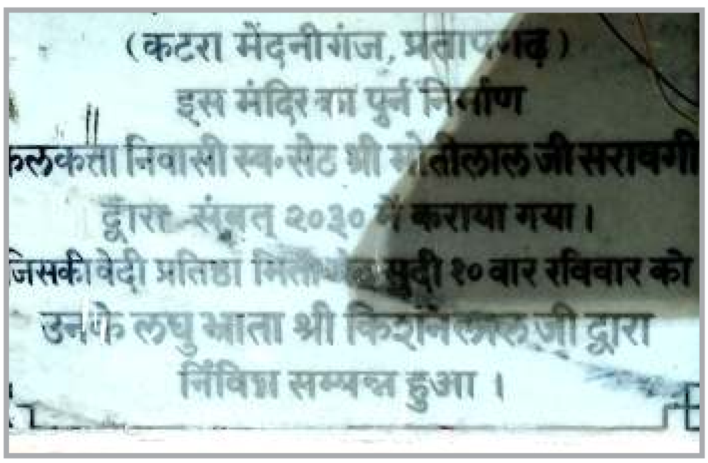

मूलनायक प्रतिमा जी 600 वर्ष प्राचीन है। ये प्रतिमा जी विशेष अद्भुत शिल्पकला वाली है। इसमे बीच मे खड्गासन श्री पार्श्वनाथ जी है। ऊपर दोनो तरफ पद्मासन वाली चन्द्रप्रभ जी की है। नीचे वाली दोनो खड्गासन श्री अभिनंदननाथ जी की है। भारतवर्ष में ऐसी विशेष शिल्पकला वाली प्रतिमा जी कम ही देखने को मिलती है।। यहाँ पर जैन समाज के 10 परिवार है।

स्थानीय संपर्क सूत्र :
श्री प्रदीप जैन जी
9936227303

- सचिन जैन, बड़ौत (उत्तरप्रदेश)

21 दिव्य जिनबिंब प्रकट – जिनधर्म की अनुपम आभा

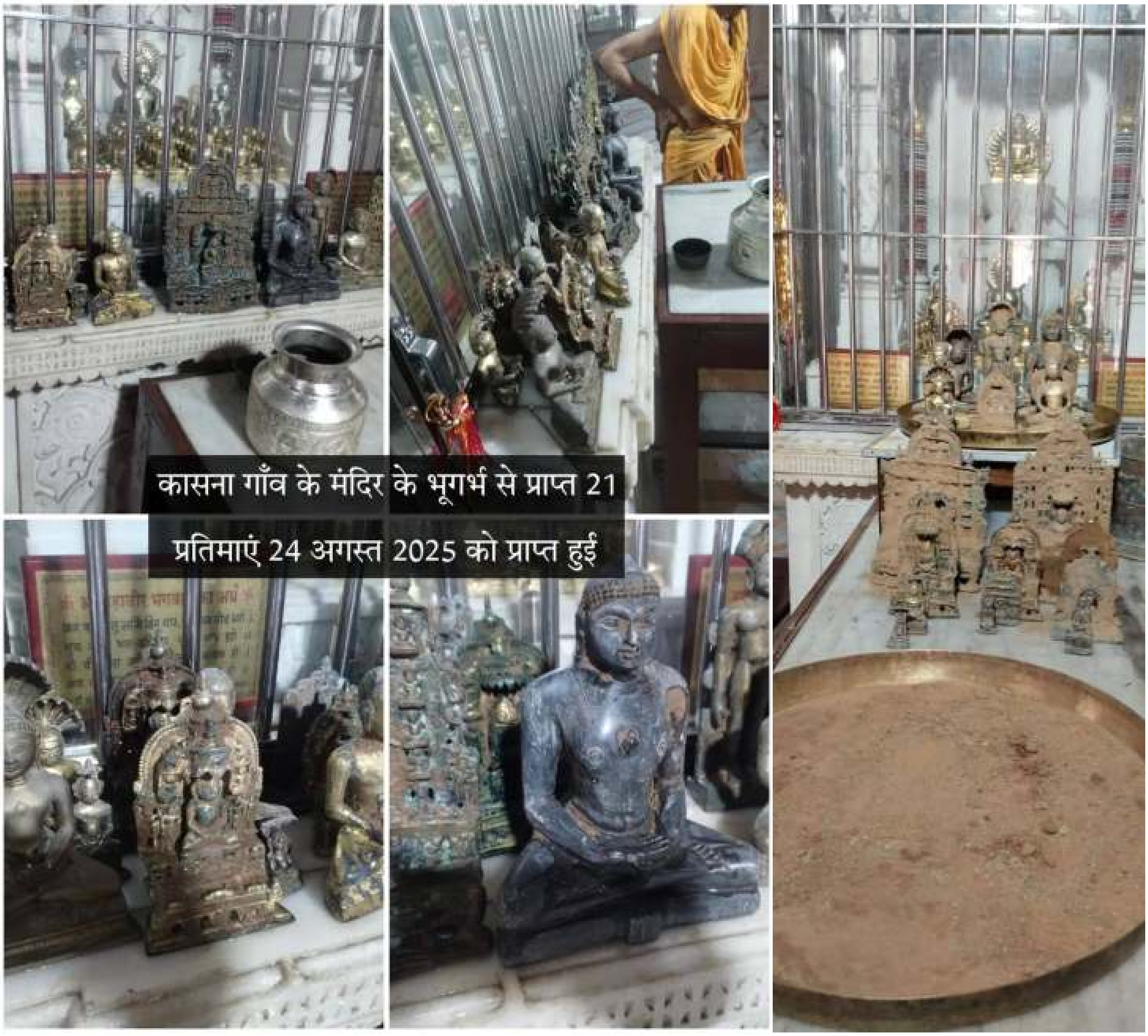

24 अगस्त 2025, रविवार, हरियाणा राज्य का कासन गाँव। गाँव में घर की साधारण खुदाई के दौरान अद्भुत दिव्य घटना घटी। धरती से 21 दिगम्बर जैन जिन प्रतिमाएँ प्रकट हुई।

इनमें से –

20 प्रतिमाएँ श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान जी की हैं।

तथा 1 प्रतिमा जी श्री १००८ महावीर भगवान की है।

☐ यह अद्वितीय घटना केवल कासन गाँव ही नहीं बल्कि पूरे जैन समाज के लिए अनमोल धरोहर और गर्व का प्रतीक है।

ऐसा प्रतीत होता है मानो साक्षात जिनबिंब धरती से प्रकट होकर हमें धर्म की ओर प्रेरित कर रहे हों।

☐ जिनशासन की अविरल महिमा

यह घटना पुनः सिद्ध करती है कि जिनधर्म सनातन, शाश्वत और अक्षय है। समय-समय पर इस प्रकार की दिव्य प्राप्तियाँ हमें यह स्मरण कराती हैं कि भगवान का शासन चिरकाल विद्धमान है।

☐ इस अलौकिक क्षण ने सभी साधर्मियों के हृदय में असीम श्रद्धा, उत्साह और आनंद भर दिया है।

पूरे क्षेत्र में धार्मिक उल्लास और दिव्यता की अनुभूति हो रही है।

तीर्थ गिरनार सुरक्षित तो धर्म, आस्था और संस्कृति सुरक्षित

- निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

अनादिनिधन सम्मेदशिखर शाश्वत सिद्धतीर्थराज: - बात सन् १८९६ की है तब भी हमारा अनादि निधन सिद्धतीर्थ सम्मेदशिखर जी के संबंध में श्वेतांबर समाज के एक मूर्तिपूजक आम्नाय की ओर से बाधाएँ उपस्थित करके विवाद पैदा कर दिया गया था। उस समय पहाड़ पर स्थित टोंकों में दिगंबर जैन धर्म की परंपरा अनुसार बीस तीर्थंकरों के चरण नहीं चरण चिह्न स्थापित थे। श्वेतांबर आम्नाय में चरण मान्य और पूज्यनीय है। हमारे शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर पहाड़ पर स्थित जल मंदिर में भी तब दिगंबर आम्नाय की मूर्तियां वेदियों में विराजमान थी। अर्थात् जल मंदिर तब दिगंबर आम्नाय का रहा है। सन् १९२६ और १९३३ में प्रीवि कौंसिल लंदन में दो बार इस तीर्थ का विवाद पहुंचा था। वहां पर भी निर्णय हमारे पक्ष में इस आधार पर हुआ था कि सम्मेदशिखर पहाड़ पर स्थित सभी बीस टोंकों में विराजमान चरण नहीं चरण चिह्न हैं, जो दिगंबर जैन धर्म की आम्नाय अनुसार हैं। तब से अब तक किसी न किसी कारण को बनाकर सम्मेदशिखर जी पहाड़ पर स्थित हमारी वंदनीय धरा पर विवाद उत्पन्न किया जाता रहा है, जो आज भी सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन है।

संथाल मारांग बुरु: अब संथाल आदिवासी समाज के इस्ट देवता मारांग बुरु संघर्ष मोर्चा ने एक नया विवाद उत्पन्न कर रखा है। वे हमारे सम्मेदशिखर पहाड़ पर अधिकार के लिए आंदोलन कर रहे हैं। उनका कहना है कि पारसनाथ पर्वत ही संथाल समाज का इस्ट देवता मारांग बुरु है।

सम्मेदशिखर पहाड़ तीर्थाटन-नियमावली:हमारे दिगंबर जैन समाज की ओर से सम्मेदशिखर जी तीर्थराज पहाड़ पर वंदना करने के लिए जाने वाले सभी लोग के लिए एक धार्मिक आचरण नियमावली तक नहीं बनाई जा सकी है। साल पर साल बीत चुके हैं। अगर पहाड़ को पर्यटन स्थल बनने से रोकना है, तो एक तीर्थाटन नियमावली बिना विलंब बनाकर झारखण्ड राज्य सरकार के माध्यम से क्रियान्वित करवाई जा सकती है। आज अजैन लोग सम्मेदशिखर तीर्थराज पहाड़ चप्पल-जूते और चमड़े के बेल्ट आदि पहने हुए निर्बंध जा रहे हैं। पहाड़ उनका आचरण धार्मिक नहीं पर्यटन स्थल जैसा जारी है।

केसरिया जी तीर्थक्षेत्र: राजस्थान में हमारा केसरिया जी धर्मतीर्थ है। उसमें विराजमान प्राचीन वीतराग मूर्तियां हमारे तीर्थंकर भगवंतों की है। हमारा यह धर्मस्थल भी न्यायालय विवाद में है।

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ: महाराष्ट्र के शिरपुर में हमारा प्राचीन अतिशयी स्थल श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर है। इसके संबंध में भी प्रकरण सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन है।

तैयार हो तीर्थ संरक्षण दस्तावेज ग्रंथ: यह स्वीकार करना होगा कि श्रमण संस्कृति की हमारी सांस्कृतिक, धार्मिक आस्था की विरासत और हमारे तीर्थों पर अधिकार और सुरक्षा पर प्रश्न चिह्न लगते जा रहे हैं। उनकी प्राचीनता और अस्तित्व के कुछ तथाकथित स्वार्थी तत्वों द्वारा अनधिकृत कब्जा करने का निरंतर प्रयास दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। जो गंभीर चिंता का विषय बनकर चिंतन करने के लिए बाध्य कर रहा है। तीर्थों का महात्म्य, हमारे पूर्वजों द्वारा संरक्षित धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए संदर्भ, शिलालेख, इनकी सांस्कृतिक विरासत की ऐतिहासिकता के संबंध में दस्तावेज ग्रंथ का प्रकाशन होना नितांत आवश्यक हो गया है।

दिगंबर जैन सिद्धतीर्थराज गिरनार पर्वत: जिनसेन स्वामी का प्रमाण: नेमिनाथ जी तीर्थंकर भगवान जिस स्थान से मुक्त हुए, वह स्थल अत्यंत पवित्र और लोकपूज्य है। उस स्थान के गौरव को सदाकाल के लिए अक्षुण बनाए रखने के लिए इन्द्र ने वज्र से सिद्धशिला का निर्माण किया और उस पर भगवान का चिह्न उत्कीर्ण किया। वह प्रमाण दिगंबर जैन परंपरा के एक प्रमुख विद्वान हुए हैं। उन्होंने राष्ट्रकूट सम्राट अमोधवर्ष प्रथम के आध्यात्मिक सलाहकार के रूप में कार्य किया था। आचार्य जिनसेन स्वामी का जीवनकाल ८वीं शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में है। शक संवत् ७०५ (ईस्वी सन् ७८३) में उनके हरिवंशपुराण की रचना से है, जानकारी हरिवंश पुराण में दी है। आपने लिखा है:

उर्जयंतगिरि वड्की वड्कोणा लिख्य पाविनीय्।
लोके सिद्धशिलां चव्रे जिनलक्षण पडिक्ताभि : ।।

इससे स्पष्ट होता है कि तीर्थंकर के मोक्षगमन के पश्चात् उस स्थान को चिह्नित करने के लिए इन्द्र स्वयं को अपने वड्का से सिद्धशिला का निर्माणकर उस पर भगवान का चिह्न अंकित करता है, जिससे स्पष्ट होता है कि यह स्थान मनुष्य निर्मित नहीं, देव निर्मित होता है। अर्थात् गिरनार पर्वत पर यदुवंश भूषण श्री नेमिनाथ तीर्थंकर की आयुध, वस्त्र और आवरण रहित भव्य शांत और मोक्षमार्ग का मूक उपदेश करने वाली जो मूर्ति है, वह संसार के चित्त की भ्रांति को दूर करें और दिगंबर शासन को लोक में प्रसार करें।

पांचवीं टोंक में चरण उत्कीर्ण का प्रमाण: गिरनार पर्वत की पांचवीं टोंक पर इन्द्र के द्वारा वज्र से भगवान नेमिनाथ जी के लक्ष्ण/(चरण चिह्न) का स्थान बनाए जाने संबंधी बात अन्यत्र भी प्रसिद्ध है यथा:-

ककुंद भुव: खचरयोषि-दुषित—शिखरैरलंड्.कृत: ।
मेघ-पटल-परिवीत-तट-स्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा ।। १२७ ।।

वहतीत तीर्थमृषिभिश्च, सततमभिगम्यतेऽद्य च ।
प्रीति-वितत-हृदये: परितो, भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचल: ॥ १२८ ॥

"हे उर्जयंत ! तू इस पृथ्वीतल के मध्य में ककुद के समान ऊँचा है, विद्याधर दंपती तेरे ऊपर विचरण करते रहते हैं, तू शिखरों से सुशोभित है, मेघपटल तेरे तट भाग को ही छू पाते हैं तथा स्वयं इन्द्र ने तेरे पवित्र अंग पर वज्र से नेमिनाथ भगवान के चिह्न अंकित किये थे।"

इसी बात का समर्थन करते हुए पुराणसारसंग्रह में श्रीदामनंदी आचार्य ने भी लिखा है-

कुलिशेन सहस्राक्षो लक्षण पक्तिं लिलेख तत्रेश : ।
भव्यहिताय शिलायामद्यापि। च शोभते पूता ॥

इंद्र ने अपने वज्र से वहाँ गिरनार पर्वत पर शिद्धशिला बनाकर उस पर भगवान् के लक्षण लिखे (या चरण चिह्न बनाये), वह सिद्ध शिला आज भी पवित्र शोभित हो रही है। गिरनार क्षेत्र पर इंद्र ने मूर्ति स्थापित की थी-

सौराष्ट्रे यदुवंशभूषणमणे: श्रीनेमिनाथस्य या ।
मूर्तिर्मुक्ति यथोपदेशनपरा शांतामुधापोहनात् ॥
वस्त्रैराभरणैर्विना गिरिवरे देवेन्द्र संस्थापिता।
चित्तभ्रांतिमपाकरोतु जगतो दिग्वाससां शासनम् ॥ १२० ॥

सौराष्ट्र में गिरनार पर्वत पर यदुवंश भूषण श्रीनेमिनाथ तीर्थंकर श्री आयुध, वस्त्र और आभरण रहित, भव्य, शांत और मोक्षमार्ग का मौन उपदेश करने वाली जो मूर्ति स्थित है, वह इंद्र द्वारा स्थापित की गयी है। वह संसार के चित्त की भ्रांति को दूर करें और इस संसार में दिगंबर शासन को वृद्धिगत करें।

भारत के गुजरात राज्य में सौराष्ट्र के जूनागढ़ से लगभग ७ किलोमीटर की दूरी पर भव्य तथा दिव्य पर्वत गिरनार है। २२ वें तीर्थंकर श्री १००८ नेमिनाथ भगवान का केवलज्ञान कल्याणक व मोक्षस्थली पहाड़ की पांचवीं टोंक है। यह ७७२ करोड़ मुनियों की भी निर्वाण स्थली है। परपंरागत रूप से पांचों टोंकों पर दिगंबर जैनियों का पूर्णाधिकार रहा है। हम समाजजनों की उदासीनता से अन्य समाज के तथाकथितों ने कब्जा करके बहुसंख्यक होने का लाभ उठाते हुए दिगंबर जैनियों के इस प्रमुख सिद्धक्षेत्र की धार्मिक टोंकों पर सरकार के दस्तावेजों में अपने धार्मिक नाम बदलवा लिये गए हैं।

गिरनार पर्वत पर स्थित दिगंबर जैनियों की निर्वाण चरण-चिह्न की मूल सिद्ध स्थली को न कोई बदल सकता है और न उसका समझौता किया जा सकता है। सभी की सभी प्राचीन आगम सम्मत हमारी धार्मिक विरासत है। उसका सौदा करने का किसी को भी अधिकार है ही नहीं। २ जुलाई २०२५ को भगवान नेमिनाथ जी के मोक्ष कल्याणक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विमोचित पुस्तक-गिरनार-'सत्य और तथ्य' जैन-अजैनों के प्रमाणों के आधार पर तैयार की गई है। जूनागढ़ जिला न्यायालय और गुजरात उच्च न्यायालय में प्रस्तुत प्रमाण हमारे पक्ष का पोषण करने के लिए पर्याप्त है।

अहमदाबाद में चातुर्मास कर रहे, परम पूज्य चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज जी गिरनार जी का सिद्ध तीर्थराज सदा के लिए हमारे दिगंबर जैन धर्म के अनुयायियों का ही रहे, इस दिशा में चिंतित है। दिल्ली चातुर्मास के अवसर पर भी आपने गिरनार जी तीर्थ के लिए समाज को प्रेरणा प्रदान की है। आपके सानिध्य में ०४ सितंबर २०२५ के दिन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन की पहल पर गिरनार जी तीर्थक्षेत्र के संबंध में एक बैठक आहुत हुई। जिसमें आचार्य जी के भक्त, सरल स्वभावी, धार्मिक व्यक्ति श्री सुनील जी जैन वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय को गिरनार जी तीर्थक्षेत्र से संबंधित गुजरात उच्च न्यायालय में चल रहे प्रकरण के लिए निर्देशक घोषित किया गया है। श्री सुनील जी जैन से समाज की मात्र इतनी सी अपेक्षा है कि उनके योगदान से अल्पसंख्यक दिगंबर जैन समाज के संवैधानिक धार्मिक और मौलिक अधिकार का लाभ मिलेगा। गिरनार जी प्रकरण से संबंधित पुष्ट प्रमाणों के आधार पर कल्पनातीत परिणाम मिलेगा।

बहिरंग और अंतरंग परिग्रह से मुक्त होकर आत्मा का चिंतन करना ही आकिंचन्य धर्म- आचार्य श्री वर्धमानसागर जी

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने दस लक्षण पर्व के नवें दिन अपने मंगल प्रवचन में कहा कि बहिरंग और अंतरंग परिग्रह से मुक्त होकर आत्मा का चिंतन करना ही आकिंचन्य धर्म है। उन्होंने कहा कि "मैं अकेला हूं, आत्मा ही सत्य है, यह देह मेरा नहीं है" ऐसा चिंतन करने से आत्मा निर्मल और स्वच्छ होती है। आचार्य श्री ने बताया कि वर्षों पूर्व २६ प्रतिमाओं का प्रकट होना हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता और बुद्धिमता का परिचायक है। विधर्मियों और आतताइयों से प्रतिमाओं को सुरक्षित रखने हेतु उन्हें भूमिगत किया गया था। यह आज भी भगवान आदिनाथ के चमत्कार और भक्तों की भक्ति का परिणाम है। राजेश पंचोलिया के अनुसार, ९ का अंक अक्षय अंक है जो परिग्रह से निवृत्ति और आत्मा की शुद्धि का प्रतीक है। दस बहिरंग और चौदह अंतरंग परिग्रहों का त्याग ही आकिंचन्य धर्म है, जिससे आत्मा दर्पण के समान स्वच्छ हो जाती है।

क्षमा करने के लिए सबसे अधिक साहस जरुरी- मुनि श्री प्रमाणसागर

आज का युग 'रिएक्शन' का युग है, छोटी सी बात पर रिश्ते टूट जाते हैं, पोस्ट पर कमेंट्स से भावनाएं आहत हो जाती हैं। अहंकार इतनी ऊंचाई पर बैठा है कि 'मैं गलत नहीं हो सकता' का भ्रम हमें अंदर से खोखला कर देता है यह उद्गार मुनि श्री प्रमाण सागरजी महाराज ने व्यक्त किए। क्षमावाणी पर्व आंतरिक सफाई का पर्व है जैसे दीपावली पर हम घर की सफाई करते हैं, वैसे ही क्षमावाणी पर्व आत्मा की सफाई का पर्व है। मुनि श्री ने कहा कि क्षमा मांगने को लोग कमजोरी मानते हैं, पर सच्चाई यह है कि क्षमा करने के लिए सबसे अधिक साहस चाहिए। "क्षमा वीरस्य भूषणम।" या" मिच्छामी दुक्कड़म" सिर्फ एक शब्द नहीं, बल्कि यह हमारा संकल्प बने "मिच्छामी दुक्कड़म" का अर्थ है" यदि मुझसे जाने-अनजाने कोई अपराध, कोई कटुता, कोई चुभन हुई हो, तो मैं हृदय से क्षमा चाहता हूँ।" मुनि श्री ने कहा कि बाहर से हम कितने ही पूजा पाठ, व्रत उपवास कर लें, यदि हमारे अंदर काम, क्रोध, लोभ, और मोह की दुवृत्तियां पनप रही है तो हमारा क्षमावाणी मनाना सार्थक नहीं हो सकता।

विकृतियों को 'भावनायोग' के अभ्यास से हटाया जा सकता है- उन्होंने कहा कि क्षमा करने और क्षमा मांगने में मन वाणी और व्यवहार में पवित्रता होंना जरुरी है। तन की अपवित्रता तो बाहर के जल से साफ हो सकती है, लेकिन मन की पवित्रता के लिए विद्वेष, वासना, लोभ, ईर्ष्या, वैमनस्यता, छल, कपट से रिक्त होना जरूरी है। इन विकृतियों को 'भावनायोग' के अभ्यास से हटाया जा सकता है। मुनि श्री ने कहा 'भावनायोग करने से जैसा हम चाहेंगे वैसा हमारा जीवन बनेगा। मनोविज्ञान भी कहता है कि जैसा हम देखते है, जैसा हम सुनते है तथा जैसा हम महसूस करते हैं। वह सभी घटनाएं और संस्कार हमारे अवचेतन मन में अंकित हो जाते है और यहीं से हमारा अवचेतन मन हमारे चेतन मन को प्रभावित करता है, इसलिए मन को अपवित्र करने वाले संसर्ग से बचिए।

क्षमावाणी पर्व आत्म शुद्धि का पर्व है - मुनि श्री ने कहा धर्म पवित्र हृदय में ही बसता है, और मन की मलिनता धर्म की तेजस्विता को मंद कर देती है। जिसका मन अपवित्र होता है, वह लोभ और लालसा से भरा एवं सदैव असंतुष्ट रहता है, जो खुद बुरा सोचता है। वह दूसरों को भी बैसा ही मानता है और वह कभी किसी को सम्मान नहीं दे सकता, क्षमावाणी पर्व आत्म शुद्धि का पर्व है आत्मशुद्धि लिए बोध वाक्यों को बार-बार दोहराइए। मैं शुद्ध आत्मा हूं। मैं पवित्र आत्मा हुं पवित्रता मेरा स्वभाव है। पवित्रता मेरा धर्म है, जब हम बार-बार इन वाक्यों को दोहराएंगे तो यह हमारे भावों को शुद्ध करने में निमित्त बनेगा।

संयम-शील के पालन से नर नारायण बन जाता है- आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

विरागोदय तीर्थ पथरिया में पट्टाचार्य विशुद्ध सागरजी ने धर्मसभा में कहा कि- आत्मा में लीनता, निज में निज की लीनता ही ब्रह्मचर्य व्रत है। आत्म ब्रह्म में लीनता ही सर्व-श्रेष्ठ है। आत्मान्वेषण, आत्म रुचि, शुद्धात्म-लीनता ही उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य धर्म है। शीलव्रत, ब्रह्मचर्य सर्व-प्रधान अंक के समान है, अन्य व्रत शून्य के समान हैं। ब्रम्हचर्य व्रतों में प्रधान है। ब्रह्मचर्य श्रेष्ठसाधना है। ब्रह्मचर्य सिद्धि का साधन है। ब्रम्हचर्य महानता का व्रत है। ब्रम्हचर्य शूरवीरों का चिह्न है। ब्रह्मचर्य उत्तम-साधना है। ब्रह्मचर्य व्रतों में सम्राट है। ब्रह्मचर्य मुक्ति का उपाय है। ब्रह्म-स्वरूप निजात्मा में लीन होना ही ब्रह्मचर्य धर्म है। परम पुण्यात्मा का परिचय है ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ-पुरुषों का गुण है। अब्रह्म, काम-सेवन, वासना, पशु-वृत्ति मानसिक रोग है। अब्रह्म अनर्थकारी है। अब्रह्म-सेवन महा-हिंसक है। अब्रम्ह भाव काम-सेवन से शक्ति क्षीण हो जाती है, बुद्धि का क्षय होता है, चेहरे की चमक चली जाती है, पुण्य क्षीण होता है, रुग्नता बढ़ती है, नेत्रों की ज्योति घटती है, बाल सफेद होते हैं, मन चंचल होता है, संताप होता है, तृष्णा जाग्रत होती है, विशुद्धि का हास होता है। स्त्री संसर्ग,

सरस आहार, शरीर श्रृंगार, गीत-नृत्य, धन संग्रह, रात्रिसंचरण ये अब्रह्म के कारण हैं। विषय- कषायों में दुर्भाव को छोड़कर, शीलव्रत धारण करना ब्रम्हचर्य धर्म है। स्त्रियों को पुरुषों से तथा पुरुषों को स्त्रियों के प्रति जो राग दृष्टि उससे प्रेरित होकर जो क्रिया है, यही अशांति का कारण अब्रह्म है। इन्द्रिय-विषयों में प्रवृत्ति करना, अब्रह्ममान है। संयमित जीवन जीना, पवित्र परिणाम रखना, सम्भोग से विरक्त होना ही ब्रम्हचर्य धर्म है।

शीलवान् पुरुषों का सर्वस्व ही ब्रम्हचर्य धर्म है। अन्तर्मुखी दृष्टि, आत्म ब्रम्ह में झाँकना ही ब्रहमचर्य धर्म है। शरीर का प्राण वीर्य है, व्रतों का प्राण शील है। संयम-शील के पालन से नर नारायण बन जाता है। शीलवान के प्रभाव से स्वर्ग के देव भी प्रभावित हो जा जाते हैं। ब्रह्मचर्य के अभाव में सर्व साधनायें व्यर्थ है। ब्रहमचर्य व्रत चिन्तामणि रत्न के सामान महत्त्वपूर्ण है। शीलवन्त की निर्धनता भी आभूषण है। शीलवृत पालो, शिवत्व को प्राप्त करो। शिव बनो, शव मत बनो। धरती पर सबसे बडा परम वीर नहीं है, जो तरुणियों से प्रभावित नहीं होता है।

आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के सानिध्य में श्री गिरनारजी तीर्थ संरक्षण पर महत्वपूर्ण बैठक संपन्न

दिनांक 04 सितम्बर 2025 को अहमदाबाद में श्री गिरनार जी तीर्थ की वास्तविक स्थिति पर भविष्य में तीर्थ की सुरक्षा संवर्धन के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। उक्त बैठक में पूज्य आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद एवं सानिध्य प्राप्त हुआ । इस बैठक में प्रमुख रूप से श्री जम्बूप्रसाद जैन, गाज़ियाबाद राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री सौभागमल जी कटारिया, अहमदाबाद अध्यक्ष – निर्मल ध्यान केंद्र सीनियर एडवोकेट सुनील जैन, दिल्ली सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया, श्री विजय जैन, अहमदाबाद राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर राष्ट्रीय महामंत्री, श्री

जवाहरलाल जैन, सिकंदराबाद अध्यक्ष-उत्तरप्रदेश उत्तराखंड अंचल, श्री पारस जैन बज, अहमदाबाद अध्यक्ष-गुजरात अंचल, श्री ऋषभ जैन, अहमदाबाद मंत्री- गुजरात अंचल, श्री अजय जैन अहमदाबाद, एडवोकेट श्री मनोज जैन, दिल्ली सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया श्री शरद जैन, दिल्ली, संपादक-सांध्य महालक्ष्मी आदि महानुभाव उपस्थित रहे ।उक्त महानुभावों की उपस्थिति में इस बैठक में श्री गिरनार जी केस के सम्बन्ध में अब तक हुई कार्यवाही की जानकारी दी गयी तथा तीर्थ संरक्षण पर गहन चर्चा विचारणा के बाद महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये।

जीवन में उपलब्धि के लिए त्याग बहुत आवश्यक - आचार्य श्री विनिश्चय सागरजी

आचार्य श्री विनिश्चय सागरजी महाराज सानिध्य में दसलक्षण पर्व के आठवें दिवस को उत्तम त्याग धर्म के रूप में मनाया गया। मंदिर जी में उत्तम त्याग धर्म की आराधना की गई। आचार्य श्री ने त्याग के बारे में बताते हुए कहा कि डर सबको लगता है त्याग से लेकिन, जब भी उपलब्धि होगी वो त्याग से ही होगी। बिना त्याग के उपलब्धि नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि फैक्ट्री नहीं जाएं, दुकान पर नहीं जाएं तो धन का अर्जन होगा क्या? नहीं होगा तो घर को छोड़ना ही होगा। हम कहीं भी दृष्टि डालें तो त्याग तो करना ही पड़ता है। उन्होंने अगले विवेचन में कहा कि आत्म हित के प्रयोजन के लिए त्याग करना उत्तम त्याग कहलाता है। लौकिक कार्यों के लिए नहीं आत्म हित के लिए त्याग करना। बहुत से लोग क्या करते है, मेरा यह काम नहीं होगा तब तक मेरा यह त्याग है। ऐसा त्याग आत्म हित के लिए नहीं होता। ऐसा त्याग लौकिक हित के लिए होता है, हमें आत्महित करना चाहिए।

भूखे रहना उपवास नहीं- उपवास की परिभाषा को बताते हुए आचार्य श्री ने कहा कि भूखे रहना उपवास नहीं है। उप का अर्थ है आत्मा वास का मतलब है, आत्मा में रहना। आत्मा के प्रयोजन से चारों प्रकार के आहार का त्याग करना उपवास है। शरीर कैसा भी हो, यदि भोजन नहीं करेंगे तो शरीर तो मुरझाएगा। शरीर के सामने हम जीत नहीं सकते लेकिन, हम आत्मा के सामने

खड़े हो जाएं तो शरीर को जीत सकते हैं। उपवास के अंदर शरीर के संतुलन बनाने को नहीं कहा गया है। आत्मा के संतुलन को बनाने को कहा गया है।

आचार्य श्री विशुद्ध सागरजी, मुनि श्री समत्व सागरजी व मुनि श्री सौम्य सागरजी के दर्शन व तीर्थ सुरक्षा पर चर्चा

सोमवार 25 अगस्त को भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी, महेन्द्र जैन जी, टीकमगढ़ व चैनल महालक्ष्मी के साथ पथरिया, टीकमगढ़, शाहगढ़ में संतों के दर्शन, आशीर्वाद व धर्मचर्चा के लिये गये। पथरिया में आचार्य श्री विशुद्ध सागरजी ने कहा कि प्राचीन तीर्थों की सुरक्षा के लिये जनजागरण अभियान जगह-जगह करना होगा। चल-अचल तीर्थों की सुरक्षा के लिये एक पुस्तक प्रकाशित करें, करने के लिये आचार्य श्री ने शीर्षक व संक्षिप्त जानकारी दी। शाहगढ़ में मुनि श्री समत्व सागरजी से चर्चा हुई जिन्होंने 12 वर्ष पहले लाखों का पैकेज छोड़ दिगंबरत्व को ग्रहण किया। गूगल से अनुभव शेयर करते हुए उन्होंने दान राशि नई तकनीक से एकत्र करने पर जानकारी दी। हर मंदिर को जड़कर कल्याण जी आनंद जी पेड़ी की तरह तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत बनाने को कहा। साथ ही तीर्थक्षेत्रों का डिजीटल रिकॉर्ड करने पर भी जोर दिया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के गत वर्ष अल्पसंख्यक आयोग में पहली बार जैन समाज की बैठक का अनुभव साझा करते हुये चैनल महालक्ष्मी ने बताया कि कमेटी की अपील पर अल्पसंख्यक मंत्री ने आवश्यक सहयोग का आश्वासन भी दिया। केवल 17 मन्दिरों से आवेदन मिले, पर एक के साथ भी जरूरी कागजात पूरे नहीं लगे थे। मुनि श्री ने कहा, यही वास्तुस्थिति है, काम बहुत टेढ़ा, पर आज फिर से प्रयास शुरू करेंगे, तभी आने वाले कल को सुरक्षित रख पाएंगे। शाहगढ़ में मुनि श्री सौम्य सागरजी ने पूरी सभा को उद्बोधन देते हुए कहा कि आज सैकड़ों संस्थायें बनी हुई हैं, पर तीर्थ - जिनालय असुरक्षित है। हर मंदिर को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ना होगा। और अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जी से कहा कि आप अपने कमेटी मेम्बरों के साथ हर मन्दिर तक पहुंचे और पास के सक्षम मंदिर को नजदीक के कमजोर मंदिर की जिम्मेदारी भी दें। लोगों को तीर्थ यात्राओं पर जाने पर भी बल दिया।

बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली में धर्मसभा के बाद आचार्य 108 श्री प्रज्ञ सागरजी से तीर्थों की सुरक्षा पर चर्चा

बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली में धर्मसभा के बाद आचार्य 108 श्री प्रज्ञ सागरजी से चैनल महालक्ष्मी की चल-अचल तीर्थों की सुरक्षा पर 12 अगस्त को चर्चा हुई। इस संबंध में आचार्य श्री ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी देश भर से एक हजार मंदिर को चुन ले और उनको तीर्थक्षेत्र कमेटी का सदस्य बनायें। प्रत्येक मंदिर गुल्लक योजना, सदस्य योजना, कलश योजना, तीर्थ सुरक्षा योजना तथा अन्य योजनाओं के साथ हर वर्ष तीर्थक्षेत्र कमेटी को एक लाख रुपये सहयोग दे। एक हजार सम्पन्न मंदिर, आपको 25 हजार दिगम्बर जैन मंदिर में से मिल ही जाएंगे। बस आपको चिह्नित करना है, जैन मंदिरों का यथोचित सम्मान करना है और जोड़ना है। इस पर सान्ध्य महालक्ष्मी ने कहा कि साधुओं के उद्बोधन, आशीर्वाद के बिना यह संभव नहीं हो सकता। इस पर आचार्य श्री ने कहा कि संतों का आशीर्वाद जरूर लें, पर एक साधु को आगे कर उनके ही दिशा-निर्देश में चलना होगा। एक-दो बार कमेटी के 3-4 लोग जायें, तो यह संभव हो सकता है और इस तरह 10 करोड़ का फंड हर वर्ष भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को मिल सकता है।

Shree Neminathaya Namaha

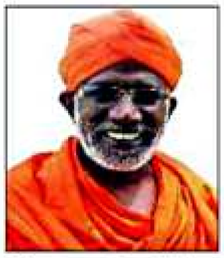

Bhattaraka Chinthamani
Dr. Swasthi Shree Dhavalakeerthi Swamiji
Founder / Chairman / Managing Trustee

Shree Kshetra Arahanthagiri Digambar Jain Management Trust
Shree Kshetra Arahanthagiri Digambar Jain Math®
Acharya Shree Akalanka Educational Trust®
Sri Arihanthagiri Matta Institutions Management Trust®

22.08.2025

मंगल आशीर्वाद

धर्म स्नेही बंधुओं,

भारत ही एक ऐसा देश है जिसे हमने माँ की उपमा दी है, धर्म की रक्षा के लिए इस माँ के अनेकों बेटों ने अपनी जान तक दाँव में लगा दी है आज एक बार फिर धर्म संकट के इस काल में भारत देश के कनार्टक प्रान्त में स्थित वर्षो प्राचीन पुण्य व पवित्र भूमि है श्री क्षेत्र धर्मस्थल।

यह एक ऐसा स्थल है जहाँ सनातन धर्म एवं जैन धर्म का अनूठा संगम देखने को मिलता है। भारत माँ के दो पुत्रों की तरह धर्मस्थल वर्षो से श्रद्धास्थल रहा है। यदि चार प्रकार का दान वृहद् रूप में कहीं हो रहा है तो वह है धर्मस्थल... जहाँ रोजाना हजारों लोगों के लिए अन्नदान एवं विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्रधान है। यहाँ श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूर्ण करने हेतु दूर–दूर से आते हैं। ये सिर्फ मंदिरों का क्षेत्र नहीं है बल्कि प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार कार्य, कृषि के लिए किसानों को पर्याप्त सहयोग एवं पशुओं के लिए सेवार्थ गौशाला आदि के माध्यम से अनेकों परमार्थ के कार्य बिना जाति पूछे किये जाते रहे हैं।

धर्मस्थल में मुख्यत: शिव मंदिर मंजुनाथ स्वामी के नाम से प्रधान मंदिर है। कई साल पहले देव लोगों ने हेगड़े परिवार के लिए साक्षात् वरदान दिया कि वह यहाँ पर आकर बसे। शिवलिंग को लाकर वहाँ पर देवताओं द्वारा स्थापित किया गया और इस मंदिर का संपूर्ण अधिकार धर्माधिकारी के रुप में हेगड़े परिवार को अनुग्रहित किया। उस दिन से आज दिन तक वहाँ के अधिष्ठाता के रुप में हेगड़े जी रहे। प्रधान मंदिर शिव मंदिर होने के बावजूद भी यहाँ जैनों मात्र का स्थल नहीं है बल्कि लाखों हिन्दु सम्प्रदायों का भी श्रद्धा आस्था का केन्द्र रहा है। यह एक सिक्के के दो पहलु की तरह दोनों ही सम्प्रदाय का श्रद्धास्थल है।

परम्परा से हेगड़े परिवार ने इस विशाल क्षेत्र का संरक्षण एवं पूजा परम्परा का कार्य बहुत ही श्रेष्ठ रूप से निभाते आ रहे हैं। स्वर्ण की तरह शुद्धता के भाव को लेकर नि:स्वार्थ भाव से श्री हेगड़े परिवार क्षेत्र की सेवा करते आ रहे हैं और आगे भी विशुद्ध रूप से पूर्ण कर्मठता से लगन से क्षेत्र की सेवा इस परिवार के प्रत्येक सदस्यों के द्वारा निभाते रहेंगे। आज युग कितना भी डिजीटल और आधुनिक हो जाये पर धर्मस्थल में आज भी हमारी प्राचीन संस्कृति सूर्य की तरह अपनी दिव्य रोशनी बिखेर रहा है। परंतु विगत दिनों इस स्वर्णिम सूर्य आभा लिये इस क्षेत्र में असामाजिक तत्त्वों द्वारा अन्य धर्मावलम्वियों द्वारा ग्रहण लगाया जा रहा है। इस क्षेत्र को कब्जा करने की पूर्ण कोशिश की जा रही है।

इस कृत्य कार्य को पूर्णता देने के लिए अन्य सम्प्रदायों द्वारा कुछ दिनों से धर्मस्थल समिति एवं हेगेड़े परिवार के ऊपर अनावश्यक झूठे–झूठे अपराध लगाये जा रहे हैं। हेगड़े परिवार का अपमान करने में कोई कसर नहीं रखी जा रही है। जिस परिवार ने अपना तन–मन–जीवन सम्पूर्ण भगवान की सेवा में समर्पित कर दिया उस धार्मिक संस्कारित परिवार पर अपमान के अपशब्दों का प्रहार किया जा रहा है। आश्चर्य की बात है ऐसा करने वालों की एक टीम बनाई गई है। जो कि अपप्रचार करके सम्मानीय हेगड़े परिवार को परेशान किया जा रहा है। हेगड़े परिवार के श्री वीरेन्द्र हेगड़े जिन्हें राष्ट्रपति के श्री कर कमलों से वर्ष 2015 में 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया। इससे पहले उन्हें वर्ष 2000 में भारत सरकार ने समाज सेवा क्षेत्र में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया था।

Thirumalai Village, Polur Taluk, Thiruvannamalai District, Tamil Nadu - 606 907 - India
Mobile : + 91 - 90926 00778 / 93626 94745 / 98407 15227 / 99447 55218
e-mail: arihanthagirijainmutt@gmail.com - www.arihanthagirithirumalai.org

Shree Neminathaya Namaha

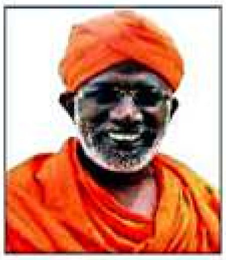

Shree Kshetra Arahanthagiri Digambar Jain Management Trust

Shree Kshetra Arahanthagiri Digambar Jain Math®

Acharya Shree Akalanka Educational Trust®

Sri Arihanthagiri Matta Institutions Management Trust®

Bhattaraka Chinthamani

Dr. Swasthi Shree Dhavalakeerthi Swamiji

Founder / Chairman / Managing Trustee

22.08.2025

जिस हेगड़े परिवार के द्वारा की जाने वाली सेवा का भारत सरकार के द्वारा सम्मान किया जाता रहा है। उस परिवार पर कीचड़ उछाला जा रहा है। हेगड़े जी ने सरकार से कहां कि आप अपनी ओर से कानूनी रूप से जो भी कार्यवाही करनी है कीजिये, गलत सावित होने पर हमें जो भी दण्ड दिया जायेगा स्वीकार है। हेगड़े जी की इस बात को सुनकर सरकार ने एसआईटी ग्रुप तैयार करके चैक करवाया, पर यहाँ पर कुछ भी गल्तियाँ प्राप्त नहीं हुई। इससे सावित हुआ कि धर्मस्थल में किसी भी प्रकार की गलत गतिविधियाँ नहीं हुई है ना होती है न होगी।

देश की समस्त जैन समाज एवं अन्य सम्प्रदाय से निवेदन है कि आप सब श्री क्षेत्र धर्मस्थल एवं हेगड़े परिवार के प्रति अपना समर्थन हर संभव हर तरीके से प्रदान करें। मोवाईल मीडिया के माध्यम से गलत-गलत संदेश भेजे जा रहे हैं ऐसे संदेशों को न ही कहीं भेजें ना ही देखें। सब झूठ मिथ्या भ्रम फैलाया जा रहा है। आपका सहयोग ही दान है।

आने वाली 29 अगस्त 2025 को सारी जैन समाज एवं समस्त भट्टारक स्वामीजी मिलकर लाखों लोगों के साथ हेगड़े परिवार के समर्थन सहयोग देने के लिए समाधान के लिए, उपसर्ग को दूर करने के लिए धर्मस्थल जा रहे हैं। 200 बसों, 500 कारों के द्वारा सभी शामिल होंगे।

आप सभी भी शामिल होकर समय दान देकर एक संस्कारित सेवाभावी परिवार के लिए आगे आये सहयोग दे, साहस दे यही विनती है।

भारत की समस्त दिगम्बर जैन समाज एवं सकल दिगम्बर जैनाचार्य साधु-आर्यिका वृन्दों से निवेदन है कि अपने उद्बोधन के माध्यम से हेगड़े परिवार का समर्थन प्रदान करें। जिससे अहिंसा परमोधर्म एवं परस्परोग्रहो जीवानाम् की परम्परा का निर्वाह किया जा सके।

"BHATTARAKA CHINTHAMANI "
SWASTHI SHREE DHAVALAKEERTHI SWAMIJI

Thirumalai Village, Polur Taluk, Thiruvannamalai District, Tamil Nadu - 606 907 - India
Mobile : + 91 - 90926 00778 / 93626 94745 / 98407 15227 / 99447 55218
e-mail: arihanthagirijainmutt@gmail.com - www.arihanthagirithirumalai.org

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सिद्ध क्षेत्रों व अतिशय क्षेत्रों सहित तीर्थों के संवर्धन व जीर्णोद्धार की श्रृंखला में

तमिलनाडू अंचल के टिंडविनम में श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन भवन मैनेजमेंट ट्रस्ट को ₹ 7.50 लाख की सहयोग राशि प्रदान की।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी 125 वर्ष पूर्ण होने पर 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष मनायेगी। इस पुनीत अवसर पर आप भी तीर्थों के संरक्षण, जीर्णोद्धार संवर्धन हेतु यथायोग्य भागीदारी निभानें में तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनें, सहयोग करें, प्राचीन तीर्थों की सामूहिक यात्राएं करें।

तीर्थों की सुरक्षा के लिये इस **QR** कोड को स्केन कर दान राशि सीधे अपने मोबाइल के माध्यम से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई को भेज सकते हैं।

M-59

जम्बू प्रसाद जैन	संतोष पेंढारी	जवाहर लाल जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमैन (शतकोत्तर रजत वर्ष)

सम्पर्क : 9833671770, 9109228683

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन क्रम में

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सिद्ध क्षेत्रों व अतिशय क्षेत्रों सहित तीर्थों के संवर्धन व जीर्णोद्धार की श्रृंखला में

मध्यांचल समिति की अनुशंसा पर

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बनेडिया जी

सोलर पैनल लगाने हेतु ₹ 2 लाख की सहयोग राशि प्रदान की गई।

इससे जहां यात्रियों को अबाधित विद्युत आपूर्ति की सुविधा मिलेगी व तीर्थों के बिजली खर्च में अधिक बचत हो सकेगी। ध्यान रहे, मध्यांचल की समिति के सहयोग से इससे पूर्व उपरोक्त तीर्थ पर वाटर कूलर व वाशिंग मशीन की भी यात्रियों की सुविधा हेतु उपलब्ध कराई गई।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी 125 वर्ष पूर्ण होने पर 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष मनायेगी। इस पुनीत अवसर पर आप भी तीर्थों के संरक्षण, जीर्णोद्धार संवर्धन हेतु यथायोग्य भागीदारी निभानें में तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनें, सहयोग करें, प्राचीन तीर्थों की सामूहिक यात्राएं करें।

M-60

तीर्थों की सुरक्षा के लिये इस **QR** कोड को स्केन कर दान राशि सीधे अपने मोबाइल के माध्यम से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को भेज सकते हैं।

जम्बू प्रसाद जैन	संतोष पेंढारी	जवाहर लाल जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमैन (शतकोत्तर रजत वर्ष)

सम्पर्क : 9833671770, 9109228683

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक तैयार कर रही है आपका गुडलक

घर-घर गुल्लक योजना

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्श सागरजी मुनिराज ने ऋषभ विहार दिल्ली में 23 जनवरी को धर्मसभा में कहा भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा गुल्लक योजना चलायी जा रही है। ध्यान रहे, यह गुल्लक योजना आपको आर्थिक सहयोग के साथ-साथ तीर्थों के प्रति भावनात्मक दृष्टि से भी जोड़ने का सरल-सहज उपाय है। हमें चाहिए कि हम अधिक से अधिक संख्या में तीर्थों की वंदना करें। तीर्थों पर स्वयं पहुंचे और गुल्लक योजना के तहत पहुंचायें। तीर्थक्षेत्र कमेटी की यह गुल्लक आपके भाग्य को गुड-लक बनाने के लिये कारगर सिद्ध होगी।

तीर्थों की सुरक्षा के लिये सहयोग करने के लिये आज ही सम्पर्क करें:-

9833671770, 9109228683

M-22

तीर्थों की सुरक्षा के लिये इस QR कोड को स्कैन कर दान राशि सीधे अपने मोबाइल के माध्यम से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई को भेज सकते हैं।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi September 2025
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.